



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 201]

नई दिल्ली, सोमवार, अगस्त 18, 2003/श्रावण 27, 1925

No. 201]

NEW DELHI, MONDAY, AUGUST 18, 2003/SRAVANA 27, 1925

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क निदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 14 अगस्त, 2003

अंतिम जांच परिणाम

विषय : यूरोपीय संघ, दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर मूल के अथवा वहां से निर्यातित मैथिलीन क्लोराइड के आयातों के सम्बन्ध में पाटनरोधी जांच।

सं. 17/1/2001-डीजीएडी.— 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली 1995 को ध्यान में रखते हुए:

क. प्रक्रिया

1. प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई:-

(क) निर्दिष्ट प्राधिकारी को (जिन्हें इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) ने यूरोपीय संघ, दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर के मूल के अथवा वहां से निर्यातित मैथिलीन क्लोराइड के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच से संबंधित प्रारंभिक जांच परिणामों को 24 दिसंबर, 2002 की अधिसूचना के द्वारा अधिसूचित किया और हितबद्ध पक्षों को अपने ज्ञात विचार इसके प्रकाशन की तारीख से चालीस दिनों के भीतर लिखित में देने का अनुरोध किया ;

(1)

- (ख) प्राधिकारी ने ज्ञात हितबद्ध पक्षों को प्रारंभिक जांच परिणामों की प्रति भेजी और उन्हें उक्त परिणामों पर अपने विचार यदि कोई हों, को पत्र की तारीख से चालीस दिनों के भीतर देने का आग्रह किया ;
- (ग) प्राधिकारी ने दिनांक 9.7.2003 को मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने का सभी हितबद्ध पार्टियों को अवसर प्रदान किया । मौखिक रूप से विचार प्रस्तुत करने वाली सभी पार्टियों को मौखिक रूप से प्रस्तुत किए गए विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया । विरोधी पार्टियों द्वारा प्रस्तुत विचारों की प्रतियां प्राप्त करने और उनका खंडन यदि कोई हो, के लिए पार्टियों को सलाह दी गई ।
- (घ) प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों को विभिन्न पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों वाली सार्वजनिक फाइल उनके अनुरोध पर निरीक्षण हेतु उपलब्ध कराई थी।
- (ङ) याचिकाकर्ताओं और अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा उठाए गए तर्कों पर प्रारंभिक जांच परिणामों और/या इन जांच परिणामों में उचित स्थान पर कार्यवाही की गई है;
- (च) उपर्युक्त नियम 16 के अनुसार इन जांच परिणामों के लिए विचार किए गए आवश्यक तथ्य/आधार (घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत) तथा उन पर प्राप्त टिप्पणियों को ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को प्रकट किया गया, इन जांच परिणामों में विधिवत् रूप से विचार किया गया है;
- (छ) जांच दिनांक 19 अगस्त, 2002 की अधिसूचना संख्या 17/1/2001 की जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के द्वारा शुरू की गई थी और यह जांच 1 अप्रैल, 2001 से 31 मार्च, 2002 (12 महीने) की अवधि के लिए की गई थी ।
- (ज) *** यह चिन्ह इस अधिसूचना में गोपनीय आधार पर किसी हितबद्ध पार्टी द्वारा दी गई सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमों के तहत इसे ऐसा ही माना है ।

(ख) जांचाधीन उत्पाद

2. वर्तमान मामले में जांचाधीन उत्पाद मैथिलीन क्लोराइड है। मैथिलीन क्लोराइड एक मिश्रण है और मिश्रण के क्लोरो-मिथेन वर्ग से संबंधित है। मैथिलीन क्लोराइड रंगहीन, महक जैसा क्लोरोफोर्म के साथ वाष्पशील तरल होता है। मैथाइल क्लोराइड का रासायनिक फार्मूला CH_2Cl_2 है।

मैथाइल क्लोराइड के उत्पादन के लिए दो प्रौद्योगिकियां हैं। यह मूल कच्ची सामग्री के द्वारा ज्ञात होते हैं जो इन प्रौद्योगिकियों में मेथान रूट और मेथानोल रूट में प्रयुक्त होते हैं। इसके बावजूद मैथिलीन क्लोराइड का दो अलग प्रौद्योगिकियों के जरिए उत्पादन किया जा सकता है, इन दो रूटों के द्वारा उत्पादित उत्पाद का तत्त्वतः समान तकनीकी वर्गीकरण है। इस प्रकार प्रौद्योगिकी में अन्तर अथवा उत्पादन प्रक्रिया का परिणाम अलग-अलग उत्पाद नहीं है।

मैथाइलीन क्लोराइड का फोटोफिल्म, बल्क और औषधि तथा भेषजीय उद्योग में उपयोग होता है। इसकी खपत फोम, रेजिन, कास्टिंग, धूमन और कृषि रासायनिक के विनिर्माण के लिए भी होता है। इसका उपयोग मुख्यतया पेंट स्ट्रिपर के रूप में होता है।

मैथाइल क्लोराइड सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के सीमा शुल्क उपशीर्ष 2903.12 और आई टी सी (एच एस) कोड 29031200 के अन्तर्गत वर्गीकृत है। तथापि यह वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे में किसी प्रकार बाध्यकारी नहीं है।

प्राधिकारी जांचाधीन उत्पाद के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

ग. समान वस्तु

3. यह मालूम करने के लिए कि मैथाइल क्लोराइड यूरोपीय संघ, दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर से निर्यातित वस्तु के समान वस्तु हैं प्राधिकारी ने तकनीकी विनिर्देशनों, विनिर्माण प्रक्रिया, कार्य और उपयोग तथा टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं पर विचार किया है।

प्राधिकारी यह भी पाते हैं कि घरेलूतौर पर उत्पादित मैथाइल क्लोराइड आयातित वस्तु की विशेषताओं जैसी मिलती-जुलती है और यह वाणिज्यिक और तकनीकी दोनों रूप से संबद्ध देशों/क्षेत्र से आयातित मैथाइल क्लोराइड द्वारा प्रतिस्थापनीय है, में कोई विवाद नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित मैथाइल क्लोराइड नियम 2(घ) के अर्थ के भीतर यूरोपीय संघ, दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर से निर्यातित उत्पाद के जैसी समान वस्तु है।

उपर्युक्त को देखते हुए प्राधिकारी समान वस्तु के बारे में प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

घ. घरेलू उद्योग

4. यह याचिका मै० गुजरात अल्कलीज एण्ड कैमिकल्स लि०, वडोदरा द्वारा दायर की गई है। याचिकाकर्ता ने बताया है कि भारत में मैथाइल क्लोराइड के उत्पादन करने वाली निम्नलिखित कंपनियां हैं ; -

- (क) मै० गुजरात अल्कलीज एण्ड कैमिकल्स लि०, वडोदरा
- (ख) मै० कैमप्लास्ट सनमार, चेन्नई
- (ग) मै० एस आर एफ लि०, मुंबई

मै० कैमप्लास्ट सनमार, चेन्नई ने याचिका का समर्थन किया है। वर्ष 1998-99, 1999-2000, 2000-2001 और 2001-2002 के दौरान संबद्ध वस्तुओं का कुल भारतीय उत्पादन निम्नानुसार रहा था:-

उत्पादक	1998-99	1999-2000	2000-2001	2001-2002
गुजरात अल्कलीज	8572	8721	9559	8975
कैमप्लास्ट सनमार -संयुक्त	14054	14151	15518	15245
याचिकाकर्ता + समर्थक	22626	22872	25077	24220
एसआरएफ लि०	2465	3266	6661	7244

भारतीय उत्पादन	25091	26138	31738	31464
-------------------	-------	-------	-------	-------

वर्ष 2001-02 में याचिकाकर्ता का कुल उत्पादन 28.52% और 2001-02 में याचिकाकर्ता और समर्थक का हिस्सा कुल भारतीय उत्पादन का 76.97% बनता है। इस प्रकार याचिकाकर्ता याचिका दायर करने और घरेलू उद्योग कहलाने का आधार की शर्त पूरी करता है।

(ड.) अन्य मुद्दे

5.1 दिनांक 9.7.2003 को आयोजित सार्वजनिक सुनवाई में इससे पहले घरेलू उद्योग द्वारा व्यक्त किए गए विचार:

हम यूरोपीय संघ, दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर से निर्यात द्वारा भारतीय बाजार में मैथाइल क्लोराइड के पाटन की जांच शुरू करने और अंतरिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी के आभारी हैं। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अधिसूचित प्रारंभिक जांच परिणाम भारतीय बाजार में यूरोपीय संघ, दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर से निर्यातों के द्वारा आश्रित महत्वपूर्ण पाटन की पहले की पुष्टि करते हैं जिससे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है। हमें विश्वास है कि पाटनरोधी शुल्क के अंतिम निर्धारण के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अपनाई जा रही आगे की प्रक्रिया प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि और घरेलू उद्योग को हुई क्षति और अत्यधिक पाटन के हमारे अनुरोध की पुष्टि करेंगे।

प्रारंभिक अनुरोध

वर्तमान याचिका मै0 गुजरात अल्कलीज एण्ड कैमिकल्स लि0 द्वारा दायर की गई है और इसका समर्थन कैमप्लास्ट सेनमार और एस आर एफ लि0 द्वारा किया गया है। याचिकाकर्ता का उत्पादन भारतीय उत्पादन का महत्वपूर्ण अनुपात बनता है।

उद्योग को वर्ष 1999-2000 में बढ़े हुए आयातों के कारण गंभीर क्षति का सामना करना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप उद्योग ने सुरक्षोपाय शुल्क लगाने के लिए एक याचिका दायर की। महानिदेशक (सुरक्षोपाय) ने यह पाया कि इस अवधि में घरेलू उद्योग को भारी क्षति हुई थी। महानिदेशक (सुरक्षोपाय) द्वारा जांच की गई अवधि वर्ष

1999-2000 थी। इसके बाद महानिदेशक (सुरक्षोपाय) द्वारा 15 दिसंबर, 2000 को अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित किए गए। जांच की शुरुआत 18 जुलाई, 2000 को की गई थी। इस प्रकार जुलाई-दिसंबर की अवधि वह अवधि थी जिसमें डी जी (सुरक्षोपाय) द्वारा जांच की गई थी। इससे बाजार में कीमत रुझान और घरेलू उद्योग की लाभप्रदता पर भी प्रभाव पड़ा।

प्रक्रिया

निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पहले से ही वर्तमान जांच में एक विस्तृत प्रक्रिया का पालन किया गया था। संबद्ध देशों में ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों, उनकी सरकार और भारत में संबद्ध वस्तुओं के आयातकों/उपयोक्ताओं को सूचना भेजी गई थी। केवल निम्नलिखित निर्यातकों द्वारा निर्दिष्ट प्राधिकारी को उत्तर भेजा गया।

1. एल II यूरोप जीएमबीएच, यूरोपीय संघ
2. आइनिओस क्लोर लि०, यूरोपीय संघ
3. बेयर (पीटीवाई) लि०, दक्षिण अफ्रीका
4. इथाइलीन ग्लाइकोल्स (सिंगापुर) प्रा० लि०, सिंगापुर

भारत में संबद्ध वस्तुओं के किसी आयातक और उपभोक्ताओं ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को उत्तर नहीं भेजा।

विचाराधीन उत्पाद

वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद मैथाइलीन क्लोराइड है। मैथाइलीन क्लोराइड मिश्रण के क्लोरोमेथान वर्ग से संबंधित मिश्रण है। मैथाइलीन क्लोराइड रंगहीन, महक जैसी क्लोरोफार्म की वाष्पशील तरल है। मैथाइल क्लोराइड का रासायनिक फार्मूला CH_2Cl_2 है। मैथाइल क्लोराइड के उत्पादन के लिए दो प्रौद्योगिकियां हैं तथा इन दो तरीकों से उत्पादित उत्पाद समान तकनीकी विनिर्देशन के होते हैं।

मैथाइल क्लोराइड सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अन्तर्गत अध्याय 29 के सीमाशुल्क उपशीर्ष सं० 2903.12 और आईटीसी के अन्तर्गत 29031200 के अन्तर्गत वर्गीकृत है। मैथाइल क्लोराइड का उपयोग फोटोफिल्म, बल्क औषधि और भेषजीय उद्योगों में होता

है । इसकी खपत फोम, रेजिन, घूमन और कृषि रसायन के विनिर्माण में भी होता है । इसका उपयोग पेंट स्ट्रिपर में भी होता है ।

समान वस्तु

घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और यूरोपीय संघ, दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर से आयातित मैथाइल क्लोराइड में कोई वास्तविक भिन्नता नहीं है । यह भौतिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्य एवं उपयोग, विनिर्देशनों, वितरण एवं विपणन और वस्तुआपे की कीमत और टैरिफ वर्गीकरण जैसी अपनी पहचान के रूप में तुलनीय है । उपभोक्ता घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयातित मैथाइल क्लोराइड का एक दूसरे के स्थान पर उपयोग कर सकते हैं । किसी विरोधी हितबद्ध पार्टियों द्वारा इन दोनों के समान वस्तु होने के बारे में कोई महत्वपूर्ण तर्क नहीं दिए हैं ।

याचिकाकर्ता ने अनुरोध किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और ई.यू., दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर से आयातित मैथाइल क्लोराइड नियमों के अर्थ के भीतर समान वस्तु है ।

स्थिति

याचिका घरेलू उद्योग की ओर से मै0 गुजरात अल्कलीज एण्ड कैमिकल्स लि0, द्वारा दायर की गई थी । याचिका का समर्थन मै0 कैमप्लास्ट सनमार और मै0 एस आर एफ लि0, द्वारा किया गया है । भारतीय उत्पादन में याचिकाकर्ता का प्रमुख हिस्सा बनता है। इस प्रकार याचिकाकर्ता नियमों के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग बनता है ।

पाटन

निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यूरोपीय संघ, दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर में संबद्ध वस्तुओं के सभी ज्ञात उत्पादकों और निर्यातकों को सूचना भेजी । कुछ निर्यातकों ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को उत्तर भेजा । तथापि उनमें से किसी ने भी निर्धारित प्रपत्र में निर्धारित ढंग से पूर्ण सूचना प्रस्तुत नहीं की । विशिष्ट निर्यातकों के संबंध में हम निम्नानुसार अनुरोध करते हैं ;

मै0 एल II यूरोप जीएमबीएच, यूरोपीय संघ

कंपनी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए अपेक्षित विस्तृत आंकड़े/सूचना में अपूर्ण उत्तर, समग्र कमी दर्शाई है। विशेषरूप से कंपनी ने घरेलू बाजार में पण्यवार ब्यौरे, संबद्ध वस्तुओं की उत्पादन लागत, एफओबी पश्चात् किए गए खर्चों को उपलब्ध नहीं कराया है। ऐसी स्थिति में यह निर्धारित नहीं किया जा सकता कि क्या बिक्रियां व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में घरेलू बाजार में किए गए थे। उत्पादन की लागत संबंधी सूचना के संबंध में याचिकाकर्ता ने अनुरोध किया है कि इस विस्तृत सूचना के उपलब्ध न होने की स्थिति में यह मानना पर्याप्त है कि निर्यातकों ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के साथ पूर्णरूप से सहयोग नहीं किया। ऐसे मामले में याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी नियमों के अनुसार वी आई ए के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण में पूरी तरह न्याय-संगत है।

निर्यात कीमत की गणना के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने भारित औसत निर्यात कीमत की गणना की है। याचिकाकर्ता का अनुरोध है कि असहयोगी निर्यातकों के लिए ज्ञात आयात सौदों के लिए न्यूनतम निर्यात कीमत पर विचार करना निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए एक तरीका है। इससे केवल यही सुनिश्चित नहीं होगा कि असहयोगी निर्यातकों की तुलना में सहयोगी निर्यातकों को हानिकर है बल्कि इससे अधिक निर्यातक निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रत्युत्तर देंगे और सूचना उपलब्ध कराएंगे। इससे यह भी सुनिश्चित होगा कि असहयोगी निर्यातक अपने असहयोग के लिए लाभान्वित नहीं होंगे।

उपर्युक्त को देखते हुए याचिकाकर्ता निवेदन करते हैं कि निर्यात कीमत का निर्धारण पहले सही ही उपलब्ध आयात रिकार्ड के आधार पर पण्यवार सूचना से न्यूनतम निर्यात कीमत पर विचार करते हुए की जाए।

एल II ने 9/7/2003 को सार्वजनिक सुनवाई के दौरान यह भी उल्लेख किया कि कांदला, भारत का यूरोप से हवाई भाड़ा लगभग 83.53/एम टी निकाला गया था। यह एल II और अन्य यूरोपीय विनिर्माताओं के लिए कारखाना निकासी निर्यात कीमत निकालने के लिए आवश्यक है।

मै0 आइनिओस क्लोर लि0, यूरोपीय संघ

कंपनी द्वारा दायर प्रश्नावली का उत्तर भी समग्र रूप से अपूर्ण है जैसे कि प्रारंभिक जांच परिणामों में बताया गया है। कंपनी ने विस्तृत सूचना उपलब्ध नहीं कराई है, जो प्रश्नावली के उत्तर को खारिज करने के लिए पर्याप्त है। इस प्रकार सामान्य मूल्य का निर्धारण याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध सूचना के आधार पर किया जाना अपेक्षित है।

निर्यात कीमत के निर्धारण के संबंध में याचिकाकर्ता उम्पर दिए गए निवेदन को दोहराते हैं कि रिकार्ड में पण्यवार सूचना के आधार पर न्यूनतम कीमत पर विचार किए जाने की जरूरत है।

बेयर (पीटीवाई) लि०, दक्षिण अफ्रीका

कंपनी ने उल्लेख किया है कि उन्होंने जांच अवधि में किसी सामग्री का निर्यात नहीं किया है। ऐसा होने पर निर्यातक वर्तमान में कोई हितबद्ध पार्टी नहीं है। यहां उम्पर किए गए निवेदन के अधीन न्यूनतम निर्यात कीमत पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण किए जाने की जरूरत है, प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि की जानी चाहिए।

इथाइलीन ग्लिकोल्स (सिंगापुर) प्रा० लि०, सिंगापुर

कंपनी ने बताया है कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान भारत को मेथाइलीन क्लोराइड का निर्यात नहीं किया है। ऐसा होने पर निर्यातक पाटन मार्जिन के अलग आंकलन करने की मांग नहीं कर सकते।

कुछेक निर्यातकों के इस दावे के संबंध में कि जांच अवधि में उनके अपने अपने देशों से कोई निर्यात नहीं हुआ है, याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराए गए रिकार्ड में पर्याप्त साक्ष्य; जिन्हें कांदला पत्तन प्राधिकरण से लिया गया है, स्पष्ट रूप से यह प्रदर्शित करते हैं कि दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर से वस्तुओं का आयात हुआ है।

क्षति एवं कारणात्मक संबंध

याचिकाकर्ता ने यह स्थापित करने के लिए कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के पास्टन होने के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है, पहले ही पर्याप्त सूचना उपलब्ध करा दी है। घरेलू उद्योग की क्षति को स्थापित करने के निम्नलिखित मापदण्ड जिसके लिए

पहले ही सूचना उपलब्ध करा दी थी, पर विश्वास किया जाता है। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा इसका प्रारंभिक जांच परिणामों में उल्लेख किया गया है।

पाटित आयातों के मूल्य में महत्वपूर्ण वृद्धि

संबद्ध देशों से मैथाइल क्लोराइड के आयातों में वास्तविक रूप से और वर्ष 2000-01 में गिरावट प्रदर्शित करने के पश्चात् भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में भी महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। वर्ष 1999-2000 में आयातों के उच्चतम स्तर को महानिदेशक(सुरक्षोपाय) की सिफारिशों के साथ देखा जा सकता है।

संबद्ध देशों से निर्यात कीमत

संबद्ध देशों से निर्यात कीमत में रक्षोपाय अवधि और वर्तमान जांच अवधि के बीच सुधार होने के पश्चात् वर्तमान जांच अवधि में गिरावट आई है।

घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले आर्थिक मापदण्ड

उत्पादन और क्षमता उपयोग

वर्ष 1998-2001 के बीच सुधार होने के पश्चात् वर्तमान जांच में घरेलू उद्योग के उत्पादन और अब क्षमता उपयोग में (क्षमता में कोई वृद्धि नहीं होने) कमी आई है। इसके अलावा यद्यपि याचिकाकर्ता संयंत्र को उच्चतम क्षमता पर प्रचालित कर रहा है तथापि इससे घरेलू उद्योग को कोई मदद नहीं मिली जिससे घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटा उठाना पड़ा।

बिक्रियों में प्राकृतिक और संभावित गिरावट

वर्ष 1998-2001 के बीच सुधार होने के पश्चात् जांच अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में गिरावट आई है।

सूचियां

वर्षों से स्टॉक में वृद्धि हुई है। सूचियों में वृद्धि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन में हुई कमी के बावजूद हुई है।

उत्पादन लागत

यद्यपि उत्पादन की इकाई लागत में (वर्ष 2000-01 और 2001-02 के बीच) गिरावट आई है फिर भी इसमें वर्ष 1999-2000 की तुलना में वृद्धि हुई है ।

बिक्री कीमत

बिक्री कीमत (2000-01 और 2001-02 के बीच) में गिरावट आई है, इसमें 1999-2000 की तुलना में वृद्धि हुई है । बिक्री कीमत में परिवर्तन उत्पादन की लागत में परिवर्तन से अधिक या जिसके कारण घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटे हुए ।

लाभ

घरेलू उद्योग देश में सस्ते आयातों के कारण लम्बे समय से पीड़ित है । घरेलू उद्योग की लाभप्रदता वर्षों से बिगड़ रही है । इसके अलावा लाभप्रदता में जांच अवधि में काफी गिरावट आई । जांच अवधि की शुरुवात में लाभ की स्थिति से उद्योग जांच अवधि की समाप्ति तक गंभीर क्षति की स्थिति में पहुंच गया । इसके अलावा जांच अवधि में घाटे में धीरे-धीरे बढ़ोत्तरी हुई । परिणामस्वरूप जांच अवधि में घरेलू उद्योग को समग्र घाटझ हुआ जो पिछले वर्ष से अधिक है । इसके अतिरिक्त जांच अवधि में लाभप्रदता की स्थिति खराब हुई है ।

बाजार हिस्सा

क. संबद्ध वस्तुओं के आयात में संबद्ध देशों का हिस्सा भारत में संबद्ध वस्तुओं के आयातों के उच्च अनुपात को दर्शाता है ।

ख. वर्ष 2000-01 में गिरावट प्रदर्शित होने के बाद देश में उत्पाद की मांग में संबद्ध आयातों का हिस्सा महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा है, जैसे कि पहले बताया गया है वर्ष 1999-2000 के संदर्भ में तुलना महानिदेशक(रक्षोपाय) के अंतिम जांच परिणामों पर विचार करते हुए की जाती है कि उस समय घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति का सामना करना पड़ा था ।

नकदी प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव

घरेलू उद्योग द्वारा लगातार घाटा उठाना पड़ रहा है जो घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह को प्रतिकूलतः, प्रभावित कर रहा है ।

रोजगार

यद्यपि याचिकाकर्ता एक सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी है जिसका अपने कर्मचारियों को घटाने पर नियंत्रण है, तथापि याचिकाकर्ता को अपने कर्मचारियों को न्यूनतम स्तर पर रखने पर हर संभव कदम उठाने के लिए बाध्य किया गया है ।

उत्पादकता

जांच अवधि में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में 2000-01 में सुधार होने के पश्चात् पिछले वर्ष की तुलना में गिरावट आई है ।

निवेश पर आय

निवेश पर आय नकारात्मक रही । इसके बावजूद घरेलू उद्योग को जांच अवधि के शुरुआत में निवेश पर सकारात्मक आय हुई । यह जांच अवधि की समाप्ति के पश्चात् नकारात्मक रही है ।

पाटन के मार्जिन की सीमा

संबद्ध देश से पाटन मार्जिन केवल न्यूनतम स्तर से कम ही नहीं रही बल्कि यह बहुत अधिक रही । घरेलू उद्योग पर पाटन का प्रभाव काफी अधिक रहा ।

वृद्धि

अ. घरेलू उद्योग की वृद्धि को अवरुद्ध कर रहे हैं । यद्यपि जब मांग 1998-99 और जांच अवधि के बीच महत्वपूर्ण रूप से घरेलू उद्योग में पिछले वर्ष की तुलना में गिरावट आई ।

पूंजी निवेश वृद्धि की समर्थता

याचिकाकर्ता अपने ब्याज को कम करने के प्रयास के रूप में अपने ऋण देयता को कम करने के सभी प्रयास कर रहे हैं। तथापि, इस उत्पाद के विपरीत निष्पादन (कास्टिक सोडा जैसे अन्य उत्पाद के साथ) ब्याज के कम दर ऋण लेने से याचिकाकर्ता के लिए प्रमुख विषय है। निधियों को बढ़ाने के प्रयास से याचिकाकर्ता को विपरीत असर पड़ा है।

सभी मापदण्ड संचयी और समग्र रूप से यह स्थापित करते हैं कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों से वास्तविक क्षति हुई है। उपरोक्त के मद्देनजर यह अनुरोध किया जाता है कि उपरोक्त के अधीन प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि किए जाने की आवश्यकता है।

अमरीकी डालर के रूप में शुल्क

निर्दिष्ट प्राधिकारी ने अमरीकी डालर के रूप में पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की है। यह अनुरोध है कि अन्तिम शुल्क की सिफारिश अमरीकी डालर के रूप में की जाए जिससे संरक्षण की मात्रा में कमी न की जाए।

ईयू द्वारा दिए गए अनुरोधों पर घरेलू उद्योग का विरोध;

1. यह कहना तथ्यात्मक रूप से गलत है कि इस उत्पाद के संबंध में रक्षोपाय जांच अभी भी जारी है क्योंकि अंतिम जांच परिणाम महानिदेशक(रक्षोपाय) द्वारा पहले ही जारी कर दिए गए हैं।
2. यद्यपि जब भारत सरकार ने इस उत्पाद पर रक्षोपाय शुल्क नहीं लगाया है। बढ़े हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को इससे हानि नहीं हुई है, नहीं कहा जा सकता। डी जी (रक्षोपाय) जो गंभीर क्षति के मामले के बारे में वैधानिक प्राधिकारी है, ने स्पष्ट रूप से कहा है कि उद्योग को गंभीर क्षति हुई है।
3. यह पता लगाने के लिए कि घरेलू उद्योग पूरी क्षमता से प्रचालन कर रहा है या उनकी बिक्रिया बढ़ी हैं, यह नहीं स्थापित करता कि घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है।

4. यह निर्धारण करना कि आयात मांग को पूरा करने के लिए किए गए यह क्षतिरहित कीमत पर होने को सही नहीं ठहराता ।
5. घरेलू उद्योग द्वारा दायर सूचना में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि कीमत में कटौती तथा कीमत ह्रास हुआ है जिसके कारण लाभप्रदता में गिरावट आई जो घरेलू उद्योग की क्षति को स्पष्ट करता है । कई अन्य मापदण्ड घरेलू उद्योग की क्षति को दर्शाते हैं जिन्हें पहले याचिकाकर्ता द्वारा दिया गया था और उन पर विश्वास किया गया था ।
6. इस प्रकार यह देखा जा सकेगा कि ई यू द्वारा अग्रिम तर्कों में प्रारंभिक जांच परिणामों की कोई प्रमाणिकता प्रमाणकीकरण पुनर्विचार नहीं किया गया है । याचिकाकर्ता ने अनुरोध किया है कि प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि की जाए और पांच वर्ष की अवधि के लिए निश्चयात्मक शुल्क लगाया जाए ।

II. दिनांक 7.7.2003 को सार्वजनिक सुनवाई में और इससे पूर्व निर्यातकों द्वारा व्यक्त किए गए विचार ।

मै0 एल II th,ech,p

1. मै0 एल II यूरोप ने सभी हितबद्ध पार्टियों को मौखिक साक्ष्य के समय निर्यातक प्रश्नावली के अपने उत्तर की प्रतियां प्रचालित की है ।
2. उन्होंने आई सी आई एस -एलओआर रिपोर्ट की प्रतियां मैथाइली क्लोराइड की कीमत पर प्रस्तुत की है ।

III. सार्वजनिक सुनवाई में और इससे पूर्व आयातकों द्वारा व्यक्त विचार

प्राधिकारी द्वारा भेजी गई प्रश्नावली के उत्तर में किसी ज्ञात आयातक ने सार्वजनिक सुनवाई के समय कोई उत्तर या अनुरोध नहीं दिया ।

IV. यूरोपीय आयोग के शिष्टमंडल द्वारा व्यक्त किए गए विचार

यूरोपीय आयोग ने इस प्रक्रिया के अधीन निर्यातक द्वारा प्रस्तुत तर्कों का समर्थन और निम्नलिखित बिन्दुओं पर निर्दिष्ट प्राधिकारी का ध्यान आकर्षित करेगा:-

- पाटनरोधी जांच की शुरुआत तब की गई थी जब मौजूदा रक्षोपाय जांच अभी भी चल रही थी ।
- यूरोपीय आयोग ने अपनी चिन्ता को रक्षोपाय जांच में दिए गए क्षति संबंधी विश्लेषण की कमी के बारे में डब्ल्यूटीओ रक्षोपाय करार के अनुच्छेद 12.3 के तहत विचार विमर्श करने की है । इस रक्षोपाय में किए गए उपायों को भारत ने ही लागू नहीं किया है केवल यह कहा जा सकता है कि कोई क्षति नहीं हुई है । निष्कर्षों को शीघ्र स्पष्ट कर दिया जाएगा ।
- वर्तमान ए डी मामले में प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रकटन से यह स्पष्ट है कि क्या यह क्षति अभी मौजूद है । घरेलू उद्योग द्वारा पूर्ण क्षमता से प्रचालन करना यह स्पष्ट है कि मांग की पूर्ति के लिए और अधिक आयातों की जरूरत होगी ।
- अन्य घरेलू उत्पादों की बिक्रियों के लिए उपलब्ध आंकड़े प्रदर्शित करते हैं कि इन्होंने अपनी बिक्रियां बढ़ाई हैं और यहां यह जांच करना आवश्यक है कि क्या क्षति के अन्य कारक हैं ।
- चूंकि घरेलू उद्योग पूर्ण क्षमता से प्रचालन कर रहा है और आयात से अपनी बिक्रियां बढ़ा रहा है । यह केवल कीमत प्रभाव से हो सकता है लेकिन कीमत कटौती, कीमत ह्रास कम कीमत पर बिक्री और लाभप्रदता के विषय में कोई सूचना नहीं दी गई है । इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि क्षति का कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है । कीमतों के बारे में सूचना को शीघ्र खुलासा किया जाएगा चाहे वह वास्तविक कीमत हो अथवा सूचीबद्ध रूप में हो ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

1. रक्षोपाय जांच में डी जी रक्षोपाय द्वारा अंतिम जांच परिणाम, जिनमें घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति को दिखा गया था, जारी किए गए थे ।

2. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि घरेलू उद्योग ने अधिकतम रूप से अपनी क्षमता का उपयोग किया है तथापि इसे उचित कीमत वसूल करने से रोका गया और परिणामस्वरूप इन्हें वित्तीय घाटा उठाना पड़ा। यद्यपि आयातों से मांग की पूर्ति करने का लाभ है इसमें मुख्य बात यह है कि यह आयात उन कीमतों पर हुए हैं जिससे आयात प्रभावित हुए हैं। निर्यातक संबद्ध वस्तुओं की आपूर्ति उनके सामान्य मूल्य के बराबर की कीमत पर भारतीय बाजार में निर्यातों के द्वारा मांग को पूरा करने के लिए किए गए हैं न कि पाटित कीमतों पर।
3. आयातों का कीमत प्रभाव की प्राधिकारी द्वारा इन अंतिम जांच परिणामों के संगत पैराग्राफ में जांच की गई है। घरेलू उद्योग को अपनी बिक्री कीमतें उस स्तर तक घटाने पर बाध्य किया गया जो बाजार में न्यूनतम आयात कीमत के समान हो। जांच अवधि (अप्रैल-जून, 2001) की पहली तिमाही में घरेलू बिक्री कीमत में काफी गिरावट आई जो चौथी तिमाही में (जन०-मार्च 02) *** ₹0/मी. टन से *** ₹0/मी. टन रही अर्थात् संबद्ध देशों/क्षेत्र से आयात कीमतों के परिणामस्वरूप 18% तक की गिरावट आई।

(च). पाटन:

प्राधिकारी ने धारा 9 क (i) के अनुसार संबद्ध देशों/क्षेत्र से ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियों भेजीं। निर्यातकों के उत्तरों में कमियों को प्रारंभिक जांच परिणामों में दिया गया है जिससे निर्यातक से मांगी गई सूचना में नहीं दिया गया है। सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बारे में दक्षिण अफ्रीका और सिंगापुर में निर्यातकों द्वारा कोई दावा नहीं किया गया है। इस प्रकार प्राधिकारी क्रमशः सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के संबंध में सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर विश्वास करने के लिए बाध्य हुए हैं।

(क) सामान्य मूल्य

1. यूरोपीय संघ

(क) एल II यूरोप, जीएमबीएच

इस निर्यातक ने अपूर्ण जवाब दिया है जिसमें महत्वपूर्ण आंकड़ों/सूचना का सर्वथा अभाव है। घरेलू बिक्रियों पर सौदेवार सूचना, संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत और एफओबी पश्चात खर्च की गई लागत के अभाव में प्राधिकारी निर्यातकों की घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में बिक्री कीमत को निर्धारित करने की स्थिति में नहीं है।

इस प्रकार प्राधिकारी सामान्य मूल्य के संबंध में किसी वास्तविक निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकते ।

याचिकाकर्ता ने बताया है कि अनेक उत्पादों जिनमें मेथिलीन क्लोराइड एक उत्पाद है के संबंध में सूचना क्लोर अल्कली प्रकाशित करने वाली एक प्रमुख पत्रिका है । याचिकाकर्ता ने केवल इस पत्रिका की मदद से ही यूरोपीय संघ में मेथिलीन क्लोराइड की बिक्री कीमत का पता लगाने में समर्थ हुआ है । तथापि, यह नोट नहीं किया गया है इस पत्रिका में दी गई कीमतें निर्यात कीमतें हैं और इस प्रकार ये केवल सांकेतिक हैं ।

याचिकाकर्ता द्वारा यह अनुरोध किया गया है कि मेथानोल पद्धति में मेथानोल और क्लोरिन का उत्पादन की मूल उत्पादन लागत का लगभग 50% हिस्सा बनता है । याचिकाकर्ता ने यूरोपीय संघ में प्रचलित कीमतों के आधार पर क्लोरिन और मेथानोल की कीमतों पर विचार किया और भारतीय उत्पादकों के खपत मापदण्डों जैसा कि किया गया है, भारतीय उत्पादकों और संबद्ध देशों में उत्पादकों के लिए काफी भिन्न नहीं हैं पर विचार करते हुए इस क्षेत्र में उत्पादकों के लिए उत्पादन की परिकलित लागत की गणना की है ।

इस प्रकार परिकलित लागत पद्धति के अनुसार जांच अवधि के दौरान 1 अमरीकी डालर = 47.76 ₹ की औसत विनिमय दर पर एल II यूरोप, जी एम बी एच के लिए 'बल्क' उत्पाद के लिए *** अमरीकी डालर/मी० टन अथवा *** ₹/मी० टन और 'पैकड' उत्पाद के लिए *** अमरीकी डालर/मी.टन अथवा *** ₹/मी० टन को सामान्य माना गया है ।

(ख) आईनिओस क्लोर

प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांचाधीन उत्पाद के लिए निर्यातक द्वारा बताई गई उत्पादन की लागत *** डालर/मी० टन है ईयू बाजार में बल्क उत्पाद के लिए बिक्री कीमत डालर/मी० टन है और यह पैकड उत्पाद के लिए डालर मी. टन है । घरेलू बाजार में बेचे गए बल्क उत्पाद के लिए बताई गई कारखानागत घरेलू बिक्री कीमत *** अमरीकी डालर/मी० टन है जबकि पैकड उत्पाद के लिए *** अमरीकी डालर/मी० टन है । बल्क और पैकड दोनों ग्रेडों के लिए कारखानागत कीमतें निकालने के लिए विचारित समायोजनों को प्रस्तुत नहीं किया गया है और ये ज्ञात नहीं हैं ।

भारत को बल्क उत्पाद की निर्यात कीमत *** अमरीकी डालर/मी.टन है और पैकड उत्पाद के लिए यह *** अमरीकी डालर/मी.टन है । बल्क के लिए भारत की

कारखाना-गत निर्यात कीमत *** अमरीकी डालर/मी.टन है जबकि पैकड के लिए यह *** अमरीकी डालर/मी.टन है । बल्क और पैकड दोनों ग्रेडों के लिए कारखानागत निर्यात कीमतें निकालने के लिए विचारित समायोजनों को प्रस्तुत नहीं किया गया है और इसलिए ये ज्ञात नहीं हैं ।

निर्यातकों के प्रत्युत्तरों में पाई गई कमियों को प्रारंभिक जांच-परिणामों के उपर्युक्त पैरा 4(ख) में उल्लिखित किया गया है । बल्क उत्पादों के लिए दावा किए गए ***अमरीकी डालर/मी0 टन के कारखानागत सामान्य मूल्य और निर्यातक द्वारा दावा किए गए *** अमरीकी डालर/मी.टन पर विचार करके मेथिलीन क्लोराइड(बल्क) के लिए पाटन मार्जिन *** अमरीकी डालर/मी.टन (जो निर्यात कीमत का 43.41% है) बनता है ।

पैक उत्पाद के लिए *** अमरीकी डालर/मी0 टन के कारखानागत सामान्य मूल्य और याचिकाकर्ता द्वारा *** अमरीकी डालर/मी0 टन के कारखानागत निर्यात कीमत के दावे पर विचार करते समय मेथिलीन क्लोराइड (पैक) के लिए पाटन मार्जिन *** अमरीकी डालर/मी0 टन (जो निर्यात कीमत का 21.68% है) बनता है ।

तथापि उपर्युक्त पैरा 4 (ख) में दिए गए निर्यातकों के प्रत्युत्तर में कमियों के कारण निर्यातक द्वारा दी गई सूचना/आंकड़े स्वीकार करने योग्य नहीं हैं और प्राधिकारी इन अंतिम जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ निर्यातकों के उत्तर खारिज करने के लिए बाध्य हुए हैं । याचिकाकर्ता द्वारा यह अनुरोध किया गया है कि मेथानोल पद्धति में मेथानोल और क्लोरीन की लागत कुल उत्पादन लागत का लगभग 50% बनती है । याचिकाकर्ता ने यूरोपीय संघ में प्रचालित कीमतों के आधार पर क्लोरीन और मेथालीन की कीमतों पर विचार किया है और भारतीय उत्पादकों के खत मापदण्डों जैसा कि दावा किया गया है, भारतीय उत्पादनों और संबद्ध देशों में उत्पादकों के लिए काफी भिन्न नहीं हैं, पर विचार करते हुए इस क्षेत्र में उत्पादनों के लिए उत्पादन की परिकलित लागत की गणना की है ।

इस प्रकार परिकलित लागत पद्धति के अनुसार जांच अवधि के दौरान 1 अमरीकी डालर = 47.76 ₹ की औसत विनिमय दर पर मै0 आइनिओस के लिए 'बल्क' उत्पाद के लिए अमरीकी डालर/मी0 टन अथवा ₹0/मी0 टन तथा पैक उत्पाद के लिए अमरीकी डालर/मी0 टन अथवा ₹0/मी0 टन को सामान्य मूल्य माना गया है ।

2. सिंगापुर

सिंगापुर के लिए याचिकाकर्ता ने अनुरोध किया है कि घरेलू बाजार में कीमतें क्लोर अलकली में प्रकाशित नहीं हैं। सिंगापुर के घरेलू बाजार में कीमतों के कोई दूसरे समुचित पर्याप्त साक्ष्य नहीं हैं। अतः याचिकाकर्ता ने उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर सामान्य मूल्य का दावा किया है।

ऐसा माना गया है कि मैथानीन पद्धति में मैथानाल तथा क्लोरीन की कुल उत्पादन लागतका 50% है। भारतीय उत्पादकों के खपत मानदंडों को ध्यान में रखते हुए जो कि ऐसा माना गया है कि भारतीय तथा संबद्ध देशों के उत्पादकों में ज्यादा भिन्न नहीं, याचिकाकर्ता ने यूरोपीय संघ, दक्षिण अफ्रीका तथा सिंगापुर में प्रचालित मूल्यों के आधार पर मिथानॉल तथा क्लोरीन के मूल्यों पर विचार किया गया तथा इन देशों के उत्पादकों के लिए उत्पादन लागत का परिकलन किया। परिकलन लागत प्रणाली के अनुसार सिंगापुर के लिए सामान्य मूल्य ***अमरीकी डालर/मी० टन निकलता है।

जांच अवधि के दौरान 1 अमेरिकी डालर= 47.76 के औसत विनिमय दर पर सिंगापुर में इसलिए बल्क उत्पाद के लिए ***अमरीकी डालर/मी० टन या ***अमरीकी डालर/मी० टन या पैकड उत्पाद के लिए ***रुपये/मी० टन पर विचार किया गया है।

3. दक्षिण अफ्रीका

जहां तक मै० बेयर (पीटीवाई) लि०, का संबंध है, प्राधिकारी ने इनके उत्तर में यह नोट किया कि प्रारंभिक जांच परिणाम में यह पाया गया कि दक्षिण अफ्रीका से निर्यातकों ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। यहाँ मै० बेयर (पीटीवाई) लि० का कोई उल्लेख नहीं है। प्रारंभिक जांच निष्कर्षों में यह उल्लेख किया गया है कि दक्षिण अफ्रीका गणराज्य में मै० बेयर (पीटीवाई) लि०, मैथाइलीन क्लोराइड का कोई विनिर्माता नहीं है।

यह स्पष्ट किया गया था कि जांच शुरुआत के उनके जवाब में मै० बेयर ने बताया है कि जांच अवधि के दौरान भारत को दक्षिण अफ्रीका से किसी उत्पाद का निर्यात नहीं किया गया था। यह प्रारंभिक जांच परिणामों में बताया गया है। याचिका का अनुबंध 5 दक्षिण अफ्रीका से संबद्ध देशों से आयात प्रदर्शित होते हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि

संबद्ध वस्तुओं की 1501 एम टी की मात्रा का जांच अवधि के दौरान दक्षिण अफ्रीका से आयात किया गया था ।

प्राधिकारी ने पाया कि दक्षिण अफ्रीका निर्यातकों ने प्रश्नावली का निर्धारित फॉर्मेट में उत्तर नहीं दिया तथा सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन से संबंधित जानकारी नहीं दी है । प्राधिकारी ने इसलिए, निर्यातकों को असहयोगी माना है तथा सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर कार्रवाई शुरू कर दी है ।

दक्षिण अफ्रीका के लिए याचिकाकर्ता का ऐसा मानना है कि घरेलू बाजार के मूल्य क्लोर एलकेली में प्रकाशित नहीं हैं । इन देशों के घरेलू बाजारों में कीमतों के संबंध में कोई अन्य समुचित पर्याप्त साक्ष्य नहीं हैं । अतः याचिकाकर्ता ने परिकलित लागत के आधार पर सामान्य मूल्य का दावा किया है । ऐसा अनुरोध किया गया है कि मैथानाल पद्धति में मैथानाल तथा क्लोरीन की लागत कुल उत्पादन लागत का 50% है । भारतीय उत्पादकों के खपत मानदंडों को ध्यान में रखते हुए जो कि ऐसा माना गया है कि भारतीय उत्पादकों तथा संबद्ध देशों के उत्पादकों में ज्यादा भिन्न नहीं हो सकती, याचिकाकर्ता ने यूरोपीय संघ, दक्षिण अफ्रीका तथा सिंगापुर में प्रचलित कीमतों के आधार पर मिथानॉल तथा क्लोरीन की कीमत पर विचार किया है तथा इन देशों के उत्पादकों के लिए उत्पादन लागत का परिकलन किया है । परिकलित लागत प्रणाली के अनुसार दक्षिणी अफ्रीका के लिए सामान्य मूल्य यूएसडी/एम टी आता है । इस प्रकार जांच अवधि के दौरान दक्षिणी अफ्रीका में सामान्य मूल्य ***अमरीकी डालर/मी० टन या *** रू०/मी० टन है ।

अतः दक्षिणी अफ्रीका के लिए जांच अवधि के दौरान अमरीकी डालर 47.76 की औसत विनिमय दर पर बल्क उत्पाद के लिए ***अमरीकी डालर या रू०/मी० टन और पैक्ड उत्पाद के लिए ***अमरीकी डालर/मी० टन सामान्य मूल्य पर विचार किया गया है ।

(ख) निर्यात कीमत

1. यूरोपीय संघ

प्राधिकारी के पास उपलब्ध सूचना के अनुसार यूरोपीय संघ के लिए भारित औसत सी एफ कीमत *** रुपये एमटी निर्धारित किया गया है । याचिकाकर्ता की सूचना के अनुसार समुद्री भाड़ा *** अमरीकी डालर/मी० टन समुद्री बीमा प्रभाओं के

रूप में ***% की दर से बीमा, अन्तर्देशीय भाड़ा के लिए ***% और पत्तन खर्चों के लिए ***% को हिसाब में लेने के बाद कारखानागत निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है। इन लेखों में समायोजन करने के पश्चात् जांच अवधि के दौरान 1 अमरीकी डालर= 47.76 के औसत विनिमय दर पर यूरोपीय संघ के लिए कारखानागत एफओबी निर्यात कीमत *** ₹0/मी0 टन अथवा *** अमरीकी डालर/मी0 टन आकलित की गई है।

याचिकाकर्ता ने बताया है कि देश में आयातों का बल्क और लूज केवल कांदला पोत पर ही किया जा सकता है क्योंकि केवल इसी पोत में माल उतारने के लिए वांछनीय विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं तथा केवल यहीं पर आगे के लिए नौवहन उपलब्ध हैं। ऐसा देखा गया है कि यूरोपीय संघ से कांदला पोत पर *** या *** रुपये (***अमरीकी डालर/मी0 टन) के सी आई एफ कीमत पर संबद्ध वस्तुओं का आयात किया गया था। उपर्युक्त लेखों में बल्क समायोजन के पश्चात् यूरोपीय संघ के लिए पी ओ आई के दौरान यूएसडी 47.76 रुपये की औसत विनिमय दर पर ही संबद्ध वस्तुओं के बल्क नौवहन के लिए कारखानागत एफओबी निर्यात कीमत ***/मी0 टन या ***अमरीकी डालर/मी0 टन का आकलन किया है।

कांदला के अतिरिक्त अन्य पोतों पर *** ₹0 या *** ₹0/मी0 टन (*** अमरीकी डालर/मी0 टन) सी आई एफ मूल्य पर ***मी0 टन मात्रा में संबद्ध मर्चों का आयात किया गया। इन लेखों में समायोजन के पश्चात् यूरोपीय संघ के लिए संबद्ध वस्तुओं के पैक नौवहन के लिए आकलित कारखानागत एफओबी निर्यात कीमत पीओआई के दौरान 1 अमरीकी डालर= 47.76 ₹0 की औसत विनिमय दर पर *** ₹0/मी0 टन या ***अमरीकी डालर/मी0 टन है।

2. दक्षिण अफ्रीका

प्राधिकारी के पास उपलब्ध सूचना के अनुसार दक्षिण अफ्रीका के लिए भारत औसत सी आई एफ कीमत *** ₹0/मी0 टन निर्धारित किया गया है। याचिकाकर्ता की सूचना के अनुसार ***अमरीकी डालर/मी0 टन समुद्री भाड़ा के रूप में ***% समुद्री बीमा प्रभार के रूप में, *** % की दर से कमीशन, ***% अन्तर्देशीय किराये के लिए तथा ***% के पत्तन खर्चों पर विचार करने के पश्चात् कारखानागत निर्यात कीमता का निर्धारण किया गया है। इन लेखों में समायोजन के पश्चात् दक्षिण

अफ्रीका के लिए पीओआई के दौरान 1 यूएसडी = 47.76 रूपए की औसत विनिमय दर पर आकलित कारखानागत एफओबी निर्यात कीमत *** रू0/मी0 टन अथवा *** अमरीकी डालर/मी0टन है ।

3. सिंगापुर

प्राधिकारी के पास उपलब्ध सूचना के अनुसार सिंगापुर के लिए भारित औसत सी आई एफ कीमत *** रू0/मी0 टन निर्धारित किया गया है । याचिकाकर्ता की सूचना के अनुसार ***अमरीकी डालर/मी0 टन समुद्री भाड़ा के रूप में, ***% जहाजी बीमा प्रभार के रूप में, *** % की दर से कमीशन, ***% अन्तर्देशीय किराये के लिए तथा ***% पत्तन खर्च के लिए पर विचार करके कारखानागत निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है । इन लेखों में समायोजन के पश्चात् सिंगापुर के लिए आमंत्रित कारखानागत एफओबी पीओआई के दौरान 1 यूएसडी- 47.76 रूपये की औसत विनिमय दर निर्यात कीमत *** रू0 मी0 टन या ***अमरीकी डालर/मी0 टन है ।

(ग) पाटन मार्जिन

प्राधिकारी की स्थिति :

प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमों के अनुबंध-I में निर्धारित सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन के मार्जिन के निर्धारण को शासित करने वाले सिद्धांतों को अपनाने की अनुरूप पद्धति का अनुसरण किया है । पाटन मार्जिन का निर्धारण नियमों के अनुबंध-I के पैरा 6 में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसरण में सामान्य मूल्य के साथ निर्यात कीमत की उचित तुलना के आधार पर किया गया है ।

(1) एल II, यूरोप जी एम बी एच

सामान्य मूल्य ***अमरीकी डालर/मी0 टन तथा बल्क नौवहन के लिए कारखाना द्वारा स्तर निर्यात कीमत को ***अमरीकी डालर/मी0 टन पर विचार कर प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन ***अमरीकी डालर/मी0 टन (जोकि निर्यात कीमत का 85.32%) निकलती है ।

सामान्य मूल्य *** अमरीकी डालर/ मी० टन तथा पैक्ड नौवहन के लिए कारखाना द्वार स्तर पर निर्यात कीमत *** अमरीकी डालर/ मी० टन पर विचार कर प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन*** अमरीकी डालर/ मी० टन है (जोकि निर्यात कीमत का 55.75% हैं) ।

(2) आइनिओस क्लोर

*** अमरीकी डालर/मी.टन पर सामान्य मूल्य तथा बल्क खेपों के लिए *** अमरीकी डालर/मी.टन पर कारखाना द्वार निर्यात कीमत को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन *** अमरीकी डालर/मी.टन तक आता है (जो निर्यात कीमत का 85.35% हैं) ।

*** अमरीकी डालर/मी.टन पर सामान्य मूल्य तथा पैक्ड खेपों के लिए *** अमरीकी डालर/मी.टन पर कारखाना द्वार निर्यात कीमत को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन*** अमरीकी डालर/मी.टन तक आती है (जो निर्यात कीमत का 55.75% हैं)

दक्षिण अफ्रीका

*** अमरीकी डालर/ मी० टन के सामान्य मूल्य तथा *** अमरीकी डालर/ मी० टन के कारखाना द्वार निर्यात कीमत पर विचार करते हुए प्राधिकारी द्वारा मार्जिन का निर्धारण किया गया है जो *** अमरीकी डालर/ मी० टन(जो निर्यात कीमत का 99.92% हैं) निकलता है ।

सिंगापुर

*** अमरीकी डालर/ कि० ग्रा० के सामान्य मूल्य और*** अमरीकी डालर/ मी० टन के कारखाना द्वार निर्यात कीमत पर विचार करते हुए प्राधिकारी द्वारा पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है जो *** अमरीकी डालर/ मी० टन(जो निर्यात कीमत का 62.42%) निकलता है ।

ऊ. क्षति

उपरोक्त नियम 11, अनुबंध-II के तहत क्षति के बारे में जब किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जाता है तो इस प्रकारके निष्कर्ष में पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उनके प्रभाव तथा इस प्रकार की वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को क्षति का निर्धारण शामिल होगा। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांचकरना आवश्यक समझा जाता है कि पाटित आयातों के कारण भारत में समान वस्तुओं की कीमत की तुलना में कीमत में कोई उल्लेखनीय गिरावट आई है अथवा नहीं अथवा क्या इस प्रकार के आयातों से कीमतों में अन्यथा उल्लेखनीय स्तर पर गिरावट आई है, अथवा कीमत वृद्धि में अन्यथा रूकावट आई है जो कि अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ गई होती।

नियमावली के अनुबंध-II के नियम (III) के अनुसार यह अपेक्षित है कि एक से अधिक देश से किसी उत्पाद के आयातों के मामले में पाटनरोधी जांचएक साथ की जा रही है तो प्राधिकारी इस प्रकार के आयातों के प्रभाव का संचयीरूप से आंकलन करेगा। तभी करेगा जब यह निर्धारित हो जाए कि प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त 2 प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से हुए आयातों की मात्रा भारत में समान वस्तु के आयात की 3 प्रतिशत है अथवा जहां प्रत्येक देश का निर्यात 3% से कम है वहां संचयी रूप से आयात समान वस्तु के आयातों का 7% से अधिक बनता है: और आयातों के प्रभाव का संचयी आंकलन, आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों की दृष्टि से उचित है।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा और पाटन का मार्जिन उपरोक्त नियम-11 में निर्धारित सीमासे अधिक है।

भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभावकी जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उपरोक्त नियमों के अनुबंध- II(iv) के अनुसार ऐसे अन्य संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं जैसे - उत्पादन क्षमता उपयोग, - बिक्रियों पर मात्रा स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन इत्यादि।

(क) आयातों की मात्रा

मात्रा: कि०ग्रा०

क्रम सं०	1998-99	1999-2000	2000-01	अप्रैल 01-मार्च 02 कांदला पत्तन और डी जी सी आई एस
निजी देश के आयात				
यूरोपीय संघ	74,87,054	10,175,660	32,23,999	6,729,090
दक्षिण अफ्रीका	-	25,378	--	1,501,000
सिंगापुर	12,600	--	1000	5,20,000
इनिओस क्लोरडाटा				45,51,130
एलII यूरोप डाटा				42,18,200 87,69,550
कुल(संबद्ध देश)	74,99,654	102,01,038	32,24,999	107,90,330
अन्य स्रोत	17,69,054	1,80,496	6,29,701	6,49,475(डी जी सी आई एस के अनुसार)
कुल आयात	92,69,054	103,81,534	38,54,700	114,39,805

प्राधिकारी नोट करते हैं कि डी जी सी आई एस के आंकड़े दिखाते हैं कि दक्षिण अफ्रीका तथा सिंगापुर से कोई आयात नहीं हुआ। कांदला पोत के आंकड़ों की तुलना में डी जी सी आई एस के आंकड़े कम आयात दिखाते हैं।

2000-01 के आयातों की तुलना में जांच अवधि में संबद्ध देशों से मेथिलीन क्लोराइड के कुल आयात की वृद्धि उल्लेखनीय है। जांच अवधि में संबद्ध देशों ने कुल आयात का 94.32% आयात किया।

जांच अवधि में कुल आयातों में यूरोपीय संघ, दक्षिण अफ्रीका तथा सिंगापुर का हिस्सा 76.65%, 13.12% और 4.54% था ।

(ख) उत्पादन तथा क्षमता उपयोग

याचिकाकर्ता का उत्पादन तथा क्षमता उपयोग निम्नानुसार रहा था:-

जीएसीएल(मी0 टन)	1998-99	1999-2000	2000-01	2001-02(जांच अवधि)
स्थापित क्षमता	8910	8910	8910	8910
उत्पादन	8572	8721	9559	8975
क्षमता उपयोग (%)	96.21	97.88	107.28	100.73

घरेलू उद्योग के उत्पादन तथा क्षमता उपयोग के माहवार ब्यौरे पर आधारित तिमाहीवार अनुमान नीचे सारणी में दिए गए हैं-

	प्रथम तिमाही अप्रैल-जून 01	द्वितीय तिमाही जुलाई-सितंबर 01	तृतीय तिमाही अक्टूबर-दिसम्बर 01	चतुर्थ तिमाही जनवरी-मार्च 02
स्थापित क्षमता	2227	2227	2228	2228
उत्पादन	2159	2191	2463	2162
क्षमता उपयोग	96.95	98.38	110.55	97.03

उपरोक्त से यह देखा जाता है कि उत्पादन में कमी आई है । निर्धारित लागतों को विभाजित करने एवं क्षति को कम करने के लिए याचिकाकर्ता ने उच्च क्षमता पर प्रचालन किया । याचिकाकर्ता के बेहतर निष्पादन का एक संकेतक नहीं है ।

(ग) बिक्रियां तथा बाजार हिस्सा

मात्रा(मी0 टन)

	1998-99	1999-2000	2000-01	2001-02(जांच अवधि)
याचिकाकर्ता की बिक्रिया	8207	8152	9415	9158

दूसरे घरेलू उत्पादकों की बिक्रियां				
केमप्लास्ट सनमार	14,059	12,822	14,396	14557
एसआरएफ	2465	3306	6586	7448
कुल बिक्रियाँ	24731	24280	30397	31163
मांग	34,000	34,661	34,252	42,603
याचिकाकर्ता का हिस्सा	24.14%	23.52%	27.47%	21.49%
याचिकाकर्ता का हिस्सा + मांग में समर्थन	65.49%	60.51%	69.51%	55.66%
मांग में आयातों का हिस्सा	27.26%	29.95%	11.25%	26.85%
पाटित आयातों का हिस्सा	22.06%	29.43%	9.41%	25.33%

यह देखा गया है कि जांच अवधि (2001-02) में कुल आयातों तथा पाटित आयातों में पूर्ववर्ती वर्ष (2000-01) की तुलना में समग्र रूप से वृद्धि हुई है। जांच अवधि में जहां संबद्ध देशों से आयातों के बाजार हिस्सों में वृद्धि हुई है, वही मांग घरेलू उद्योग के हिस्से में कमी हुई है। मांग में याचिकाकर्ता का हिस्सा 2000-01 में 27.49% से अत्यधिक घटकर जांच अवधि में 21.49% हो गया है।

(घ) कीमत कटौती तथा कीमत ह्रास

रु०/कि०ग्रा०

वर्ष	बिक्री प्राप्तियां (रु०/कि०ग्रा०)		आयातों का पहुंच मूल्य			
	ब्लक	पैकड	यूरोपीय यूनियन	दक्षिण अफ्रीका	सिंगापुर	अन्य
1998-99	***	***	***	---	***	***
1999-2000	***	***	***	---	***	***

2000-2001	***	***	***	----	***	***
2001-02 (जांच अवधि)	***	***	*** (औसत भार) बल्क पैकड	***	***	***
			***	***		
कटौती			6.68%	(-0.04%)	12.37%	5.44%
						(-)

उपर्युक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि संबद्ध देशों/क्षेत्रों के निर्यातकों ने जांच अवधि के दौरान अपनी कीमतें काफी कम की हैं। घरेलू उद्योग को बाजार में आयातों की निम्न कीमतों से तालमेल बैठाने के लिए अपनी बिक्री कीमतों को घटना पड़ा है। संबद्ध देशों से आयात कीमतों में गिरावट के परिणामस्वरूप, घरेलू बिक्री कीमतों में, 18% की अर्थात् जांच अवधि की पहली तिमाही (अप्रैल-जून 2001) में *** रू0 मी0 टन से चौथी तिमाही (जनवरी-मार्च 2002) में *** रू0 मी0 टन की उल्लेखनीय गिरावट हुई। तथापि आयातों का कीमत प्रभाव उपरोक्त के आधार पर निर्धारित किया गया है।

मै0 आइनिओस क्लोर द्वारा किए गए अनुरोधों से प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने *** अम.डा. (*** अम.डा./मी.टन) के सी आई एफ मूल्य के बल्क ग्रेड के 3300.13 मी. टन मात्रा का और *** अम.डा. (*** अम.डा./मी.टन) के सी आई एफ मूल्य के पैकड ग्रेड के 1251 मी. टन का निर्यात किया था। मै0 एल II यूरोप के अनुरोधों से प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने *** अम.डा. (*** अम.डा./मी.टन) सी आई एफ मूल्य के बल्क उत्पाद की 4218.2 मी.टन की मात्रा का निर्यात किया है। उक्त निर्यातक द्वारा किए गए अनुरोधों के आधार पर कीमत कटौती से संबंधित स्थिति निम्नानुसार है:-

(रू0 प्रति मी0 टन)

वर्ष	बल्क पैकड		आयातों का पहुंच मूल्य (ईयू)			
			बल्क	पैकड	बिक्री मूल्य %	
घरेलू उद्योग के क्षति रहित मूल्य	***	***			बल्क	पैकड

इनिओस क्लोरो(ईयू)			***	***	34%	9.54%
			***	---	38%	—

(ड.) लाभप्रदता:

(रु० प्रति मी० टन)

याचिकाकर्ता	1999-2000	2000-01	2001-02(जांच अवधि)
उत्पादन लागत	***	***	***
बिक्री मूल्य	***	***	***
ट्रेन्ड इंडेक्स	100.00	123.65	108.67
लाभ और हानि	._***	._***	._***
ट्रेड इंडेक्स	._***	._***	._***

उपर्युक्त सारणी से यह देखा जाता है कि (2000-01 तथा 2001-02 के बीच) प्रति इकाई उत्पादन लागत में कमी आई है तथापि बिक्री मूल्य में कमी प्रति इकाई उत्पादन लागत से अधिक हुई है। याचिकाकर्ता की बिक्री की मात्रा, बिक्री मूल्य, उत्पादन लागत तथा लाभ एवं हानि के माहवार ब्यौरे पर आधारित तिमाही वार अनुमान से यह प्रदर्शित होता है कि याचिकाकर्ता के बिक्री मूल्य तथा उसे हुई हानि में वृद्धि हुई है जैसाकि नीचे दर्शाया गया है:-

	प्रथम तिमाही अप्रैल-जून 01	द्वितीय तिमाही जुलाई-सितंबर 01	तृतीय तिमाही अक्टूबर- दिसम्बर 01	चतुर्थ तिमाही जनवरी-मार्च 02
बिक्री मात्रा	2270	2145	2431	2312
बिक्री मूल्य	***	***	***	***
उत्पादन लागत	***	***	***	***
लाभ/हानि	***	***	***	***

घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में जांच-अवधि में काफी कमी आई है। जांच अवधि की शुरूआत में लाभ की स्थिति से जांच अवधि में अंत तक उद्योग का घाटे की स्थिति में छोड़ दिया गया है। इसके अलावा जांच अवधि के दौरान घाटा में क्रमिक वृद्धि हुई है।

(च) अंतिम स्टॉक:

1998-99	1999-2000	2000-01	2001-02
64	472	237	248

याचिकाकर्ता के अंतिम स्टॉक में वृद्धि हुई है।

(छ) निवेश पर वापसी

	1999-2000	2000-01	2001-02
पूँजी रोजगार	***	***	***
लाभ/हानि	—***	—***	—***
निवेश वापसी %	—***	—***	—***

(ज) नकद प्रवाह/लाभ

	1999-2000	2000-01	2001-02
लाभ/हानि(रु०/लाख)	***	***	***
ह्रास(रु०/लाख)	***	***	***
अकद प्रवाह/लाभ(रु०/लाख)	***	***	***
ट्रेंड इंडेक्स	100.00	40.88	-0.75

घरेलू उद्योग को लगातार हो रहे घाटे से घरेलू उद्योग का नकद प्रवाह बुरी तरह प्रभावित हो रहा है।

(झ) रोजगार

हालांकि याचिकाकर्ता एक सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी है जिसका कर्मचारियों को कम करने का कम नियंत्रण है। याचिकाकर्ता को अपने कर्मचारी न्यूनतम स्तर पर रखने के लिए बाध्य किया गया है। इसी समय याचिकाकर्ता को न्यूनतम मजदूरी में वृद्धि करने के लिए बाध्य किया गया जो याचिकाकर्ता कानूनी प्रावधानों के अन्तर्गत कर सकता है।

(य.) उत्पादकता

	1999-2000	2000-01	2001-02
उत्पादन (एम.टी)	***	***	***
प्रतिदिन उत्पादन(दिन/एम.टी)	***	***	***
रूझान (उत्पादन के 360 दिन शामिल करते हुए)	100	109.61	102.91

(ट) आयातों की पूर्व की स्थिति तथा निर्यात कीमत में कमी को देखते हुए बिक्री में और कमी हुई होती यदि घरेलू उद्योग ने मूल्य को कम नहीं किया होता।

(ठ) आयात घरेलू उद्योग की वृद्धि को धीमा कर रहे हैं। मांग में वृद्धि के बावजूद पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में वर्ष 2001-02 में वृद्धि ऋणात्मक रही है।

(ड) क्षति संबंधी निष्कर्ष

6. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी अनंतिम जांच परिणामों के पैर य. में क्षति के निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं और दोहराते हैं कि:

(क) संबद्ध देशों/क्षेत्र से आयातों की मात्रा में समग्र रूप से वृद्धि हुई है:

(ख) याचिकाकर्ता के बाजार हिस्से में कमी हुई है जबकि आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई है।

(ग) याचिकाकर्ता आयात कीमत के समान से कम मूल्य पर बेचने को बाध्य हुए हैं।

अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है जो उनके क्षतिरहित कीमत और निवल बिक्री वसूली से कम है जिसके कारण घाटे हुए हैं।

7. कारणात्मक संबंध

प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति संबद्ध देश, जो भारत में मेथीलीन क्लोराइड के प्रमुख निर्यातक हैं, से आयातों के कारण हुई है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि दूसरे देशों से मेथीलीन क्लोराइड के आयातों का मात्रा तथा मूल्य या तो न्यूनतम है अथवा मूल्य बहुत ज्यादा है। भारत में मेथीलीन क्लोराइड की मांग में ऐसी कमी नहीं हुई है जिससे घरेलू उद्योग को किसी प्रकार की क्षति हो सके। जहां मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा 2000-01 में 69.51% से घटकर 2001-02 में 55.66% हुआ है, वही पाटित आयातों का हिस्सा 2001-01 में 9.41% से बढ़कर 2001-02 में 25.33% हो गया। सी आई एफ तथा पहुंच मूल्य में वर्ष 2000-01 की तुलना में 2001-02 में काफी कमी हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों/क्षेत्र से आयात की कीमत से घरेलू उत्पादों की कीमत में कटौती की है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति (कीमत से कम कीमत पर बेचने को बाध्य होना पड़ा है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग उसे वसूल नहीं कर सका)। इस प्रकार घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति संबद्ध देशों/क्षेत्र से पाटित आयातों के कारण हुई थी।

8. लगाया गया पाटनरोधी शुल्क:

प्राधिकारी मेथीलीन क्लोराइड के पाटन के बारे में घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारण की सावधानीपूर्वक गणना की है और पाटन मार्जिन के बराबर अथवा उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश की है जिसे यदि लगाया जाता है तो इससे घरेलू उद्योग की क्षति समाप्त होगी। इस प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की क्षतिरहित बिक्री कीमत के साथ संबद्ध देशों से आयातों के पहुंच मूल्य से की है। जहां कहीं पाटनमार्जिन से कम मार्जिन पाया गया है वहां प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन से कम शुल्क की सिफारिश की है।

9. अंतिम निष्कर्ष

पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:

(क) मेथीलीन क्लोराइड का ईयू, दक्षिण अफ्रीका तथा सिंगापुर के मूल के अथवा वहां से भारत में निर्यात सामान्य मूल्य से कम पर किया गया है, परिणामस्वरूप इससे पाटन हुआ है।

(ख) घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

(ग) क्षति संबद्ध देश/क्षेत्र से हुए आयातों के कारण हुई है।

10. प्राधिकारी ने सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के आईटीसी(एचएस) कोड के 29031200 और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के सीमाशुल्क उपशीर्ष संख्या 2903.12 के अन्तर्गत वर्गीकरण के अन्तर्गत आने वाले यूरोपीय संघ, दक्षिण

अफ्रीका और सिंगापुर के मूल के अथवा वहां से निर्यातित मैथाइलीन क्लोराइड के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं। पाटनरोधी शुल्क की राशि कालम 9 में उल्लिखित राशि होगी।

क्र. सं.	उप शीर्ष या टैरिफ मद	वस्तुओं की सूची	वर्गीकरण	उत्पन्न का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	2903.12	मैथालिन क्लोराइड	बल्क	ईयू	सभी	कोई	कोई	118	एम.टी.	अम.डा.
2.	2903.12	मैथालिन क्लोराइड	पैकड	ईयू	सभी	कोई	कोई	80.9	एम.टी.	अम.डा.
3.	2903.12	मैथालिन क्लोराइड	बल्क	ईयू को छोड़कर सभी	ईयू	कोई	कोई	118	एम.टी.	अम.डा.
4.	2903.12	मैथालिन क्लोराइड	पैकड	ईयू को छोड़कर सभी	ईयू	कोई	कोई	80.9	एम.टी.	अम.डा.
5.	2903.12	मैथालिन क्लोराइड	बल्क/पैकड	दक्षिण अफ्रीका	सभी	कोई	कोई	140/18	एम.टी.	अम.डा.
6.	2903.12	मैथालिन क्लोराइड	बल्क/पैकड	दक्षिण अफ्रीका को छोड़कर सभी	दक्षिण अफ्रीका	कोई	कोई	140.18	एम.टी.	अम.डा.
7.	2903.12	मैथालिन क्लोराइड	बल्क/पैकड	सिंगापुर	सभी	कोई	कोई	36.30	एम.टी.	अम.डा.
8.	2903.12	मैथालिन क्लोराइड	बल्क/पैकड	सिंगापुर को छोड़कर सभी	सिंगापुर	कोई	कोई	36.30	एम.टी.	अम.डा.

11. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम 1962 के अन्तर्गत सीमा शुल्क द्वारा यथा निर्धारणीय आकलित मूल्य होगा और इसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 3, 3क, 3ख, 9 और 9 के के अन्तर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे।

12. उपर्युक्त के अधीन प्राधिकारी 24 दिसंबर, 2002 के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

13. इस आदेश के खिलाफ सीमाशुल्क, उत्पाद और स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष उपर्युक्तानुसार अपील दायर की जा सकेगी।

एल. वी. सप्तऋषि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 14th August, 2003

Final Findings

Subject : Anti-Dumping investigations concerning imports of Methylene Chloride originating in or exported from European Union, South Africa and Singapore.

No. 17/1/2001-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 thereof:

A. PROCEDURE

1. The procedure described below has been followed subsequent to the preliminary findings:
 - (a) The Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) notified Preliminary Findings vide notification dated 24th December, 2002 with regard to anti-dumping investigations concerning imports of Methylene Chloride originating in or exported from European Union, South Africa and Singapore and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication;
 - (b) The Authority forwarded a copy of the preliminary findings to the known interested parties, who were requested to furnish their views, if any, on the said findings within forty days from the date of the letter;
 - (c) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 9/7/2003. All parties presenting views orally were requested to file written submissions of the views expressed orally. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rejoinders, if any.
 - (d) The Authority made available the public file to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted and arguments made by various interested parties;
 - (e) The arguments raised by the petitioners and other interested parties have been appropriately dealt with in the preliminary findings and/or these findings;
 - (f) In accordance with Rule 16 supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received on the same, (submitted by the domestic industry alone) have been duly considered in these findings;

- (g) Investigations were initiated vide Initiation Notification No.17/1/2001- DGAD dated 19th August 2002 and investigations were carried out for the period 1st April, 2001 to 31st March, 2002 (12 months).
- (h) *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

2. The product under investigation in the present case is Methylene Chloride. Methylene Chloride is a solvent belonging to the Chloromethane family of solvents. Methylene Chloride is a colorless, volatile liquid with a chloroform - like odour. The chemical formula of Methylene Chloride is CH_2Cl_2 .

There are two technologies for production of Methylene Chloride. These are known by the basic raw material which is used in these technologies - Methane route and Methanol route. Even though Methylene Chloride can be produced through two distinctly different technology, the product produced through the two routes has essentially similar technical specifications. Thus, the difference in technology or production process does not result in different product.

Methylene Chloride is used in the photo films, bulk drugs and pharmaceutical industries. It is also consumed for manufacture of foam, resin casting, fumigants and agrochemical. It is mainly used as a paint stripper.

Methylene Chloride is classified under customs sub-heading 2903.12 of Chapter 29 of the Customs Tariff Act and 29031200 of the ITC (HS) Code. The classification is however indicative only and in no way binding on the scope of the present investigations.

The Authority confirms the preliminary findings on product under consideration.

C. LIKE ARTICLES

3. In order to establish that Methylene Chloride is a Like Article to that exported from European Union, South Africa and Singapore, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been considered by the Authority.

The Authority also finds that there is no argument disputing that Methylene Chloride produced by the domestic industry has characteristics closely resembling the imported material and is substitutable by Methylene Chloride imported from the subject countries/territory both commercially and technically. Methylene Chloride produced by the domestic industry has been treated as Like Article to the product exported from European Union, South Africa and Singapore within the meaning of Rule 2(d).

In view of the above, the Authority confirms the preliminary findings on Like Articles.

D. DOMESTIC INDUSTRY:-

4. The petition has been filed by M/s Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd., Vadodara. The petitioner has stated that the following companies are the producers of Methylene Chloride in India:-

- (a) M/s Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd., Vadodara
- (b) M/s Chemplast Sanmar, Chennai
- (c) M/s SRF Limited, Mumbai

M/s Chemplast Sanmar, Chennai has supported the petition. The total Indian production of the subject goods during 1998-99, 1999-2000, 2000-2001 and 2001-2002 was as follows:

Producer	1998-99	1999-2000	2000-2001	2001-2002
Gujarat Alkali	8572	8721	9559	8975
Chemplast Sanmar	14054	14151	15518	15245
-Supporter				
Petitioner + Supporter	22626	22872	25077	24220
SRF Ltd.	2465	3266	6661	7244
Indian production	25091	26138	31738	31464

The petitioner accounts for 28.52% of the total production in 2001-02 and the petitioner and the supporter accounts for 76.97% of the total Indian production in 2001-02. The petitioner therefore satisfies the standing to file the petition and constitutes domestic industry.

E. Other Issues:-**5. I. Views expressed by Domestic Industry prior to and in the Public Hearing held on 9/7/2003:-**

We are grateful to the Designated Authority for initiating investigations into dumping of Methylene Chloride in the Indian market by the exporters from European Union, South Africa and Singapore and recommending interim anti dumping duties. The preliminary findings notified by the Designated Authority already confirms significant dumping resorted by the exporters from European Union, South Africa and Singapore in the Indian market, which has caused material injury to the domestic industry. We are confident, the further process being followed by the Designated Authority for the final determination of the anti dumping duties shall confirm the preliminary findings and our submissions of significant dumping and injury to the domestic industry.

Preliminary Submissions

The present petition has been filed by M/s. Gujarat Alkalies & Chemicals Limited and supported by Chemplast Sanmar and SRF Limited. The production of petitioner accounts for a significant proportion in the Indian Production.

The industry had earlier suffered serious injury due to increased imports in the year 1999-2000, consequent upon which the industry filed a petition seeking imposition of safeguard duty. It was found by the Director General (Safeguard) that the domestic industry had suffered serious injury in this period. The period investigated by the DG (Safeguard) was 1999-2000. Further, the final findings were notified by the DG (Safeguard) on 15th Dec., 2000. The investigation was initiated on 18th July, 2000. Thus, the period July-Dec., 2000 was the period during which the DG (Safeguard) was conducting investigations. This also had an impact on the price trend in the market and profitability of the domestic industry.

Procedure

The Designated Authority has already followed an elaborate procedure in the present investigations. Notices were sent to known exporters/producers in the subject countries, their Government and importers/users of subject goods in India. Only following exporters responded to the Designated Authority.

1. LII Europe GmbH, European Union
2. Ineos Chlor Ltd., European Union
3. Bayer (Pty) Ltd., South Africa
4. Ethylene Glycols (Singapore) Pvt. Limited, Singapore

None of the importers and consumers of the subject goods in India responded to the Designated Authority.

Product Under Consideration

Product under consideration in the present investigation is Methylene Chloride. Methylene Chloride is a solvent belonging to the Chloromethane family of solvents. Methylene Chloride is a colorless, volatile liquid with chloroform – like odour. The chemical formula of Methylene Chloride is CH₂Cl₂. There are two technologies for the production of Methylene Chloride and the product produced through the two routes has similar technical specifications.

Methylene Chloride is classified under Customs sub-heading 2903.12 of Chapter 29 under the Customs Tariff Act and 29031200 under ITC. Methylene Chloride is used in photo films, bulk drugs and pharmaceutical industries. It is also consumed for manufacture of foam, resin casting, fumigants and agrochemical. It is used as a paint stripper also.

Like Article

There is no significant difference in Methylene Chloride produced by the domestic industry and imported from European Union, Singapore and South Africa. These are comparable in terms of their features such as physical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, specifications, distribution and marketing, pricing and tariff classification of goods. The consumer can use Methylene Chloride imported from the subject countries and Methylene Chloride produced by the domestic

industry interchangeably. There is no significant argument made by any opposing interested parties disputing that the two are like articles.

Petitioner submits that Methylene Chloride produced by the domestic industry and imported from EU, South Africa and Singapore are like articles within the meaning of the Rules.

Standing

The petition was filed by M/s. Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd. for and on behalf of the domestic industry. Petition was supported by M/s. Chemplast Sanmar and M/s. SRF Limited. Petitioner accounts for a major proportion of Indian production. Petitioner, therefore, constitutes domestic industry within the meaning of the Rules.

Dumping

The Designated Authority sent notices to all known producers and exporters of the subject goods in European Union, South Africa and Singapore. Some of the exporters have responded to the Designated Authority. However, none of them has furnished complete information in the form and manner prescribed. With regard to specific exporters, we submit as under:

M/s. LII Europe GmbH, European Union

The company has filed incomplete response, grossly lacking in vital data/information required for determination of normal value. Specifically, the company has not provided transaction-wise sales in the domestic market, cost of production of the subject goods, expenses incurred after FOB. Such being the situation, it can not be determine whether the sales made in the domestic market were in the ordinary course of trade. With regard to information on cost of production, petitioner submits that the non-providing of this vital information is sufficient to hold that the exporter has not sufficiently cooperated with the Designated Authority. Such being the case, petitioner submits that the Designated Authority is fully justified in determining normal value on the basis of BIA in accordance with the Rules.

With regard to export price calculation, the Designated Authority has calculated weighted average export price. Petitioner submits that it is the practice of the Designated Authority for non-cooperative exporters to consider lowest export price amongst known import transactions. This will not only ensure that the cooperative exporters are not at disadvantage as compared to non cooperative exporters, but also would encourage more exporters to respond to the Designated Authority and provide information. This would also ensure that non-cooperative exporters are not rewarded for their non-cooperation.

In view of the above, petitioner submits that the export price may please be determined considering lowest export price from transaction-wise information on imports already available on record.

LII also mentioned during the public hearing on 9/07/2003 that the freight rate from Europe to Kandla, India was working out to USD 83.53/MT approx. This need be

considered to arrive at Ex-Factory export price for LII and other European manufacturers.

M/s. Ineos Chlor Ltd., European Union

The questionnaire response filed by this company also is grossly deficient as stated in the preliminary findings also. The company has not provided vital information, which is sufficient for rejection of the questionnaire response. The normal value is, therefore, required to be determined on the basis of information provided by the petitioner.

With regard to determination of export price, petitioner reiterates submissions made hereinabove that the lowest price from transaction-wise information on record needs to be considered.

Bayer (Pty) Ltd., South Africa

The company has mentioned that they have not exported any material in period of investigation. Such being the case, the exporter is not an interested party at present. The preliminary finding may kindly be confirmed subject to submissions hereinabove that the dumping margin is required to be determined considering lowest export price.

Ethylene Glycols (Singapore) Pvt. Limited, Singapore

The company stated that they have not exported Methylene Chloride to India during the period of investigation. Such being the case, the exporter can not demand separate assessment of dumping margin.

With regard to claim of some of the exporters that there are no exports from their respective countries in period of investigation, petitioner submits that there is sufficient evidence on record, provided by the petitioner, which has been procured from Kandla Port Authorities, which clearly shows that goods have been imported from South Africa and Singapore.

Injury And Causal Link

Petitioner has already provided sufficient information to establish that the domestic industry has suffered material injury due to dumping of subject goods from the subject countries. Following parameters establish injury to the domestic industry, information for which was earlier provide and is being relied upon. These have been reflected by the Designated Authority in the preliminary findings.

Substantial increase in volume of dumped imports

Imports of Methylene Chloride have increased significantly from the subject countries in absolute terms as also in relation to production and consumption in India, after showing considerable decline in 2000-01. The high level of imports in 1999-2000 are to be seen alongwith the recommendations of the DG(Safeguards).

Export price from Subject Countries

Export price from subject countries has declined in the present investigation period after improving in between the safeguard investigation period and present investigation period.

Economic Parameters Affecting The Domestic Industry
Production And Capacity Utilization

Production and hence capacity utilization of the domestic industry has declined in the present investigation period after improving between 1998-2001 (there is no addition to the capacities). Further, even though the petitioner has been operating the plant at higher capacity, the same has not helped the domestic industry, as the domestic industry has suffered financial losses.

Natural and potential decline in sales:

Sales volumes of domestic industry declined in the investigation period after improving between 1998-2001.

Inventories:

Stocks have increased over the years. The increase in inventories is in spite of reduction in production by the domestic industry.

Cost of Production:

Even though unit cost of production has declined (between 2000-01 and 2001-02), the same has increased as compared to 1999-2000.

Selling Price:

Selling Price has declined (between 2000-01 and 2001-02), the same has increased as compared to 1999-2000. The changes in the selling price were more than the changes in the cost of production, resulting in higher financial losses to the domestic industry.

Profits:

The domestic industry has been suffering for a long due to cheap imports in the Country. Profitability of the domestic industry has deteriorated over the years. Further, the profitability has deteriorated significantly inter-se in the investigation period. From a situation of profits in the beginning of the investigation period, the industry has been left to a situation of severe losses towards the end of the investigation period. Further, the losses increased gradually within the investigation period. As a result, the overall losses to the domestic industry in the investigation period were higher than previous years. Further, the profitability deteriorated significantly inter-se investigation period.

Market share:

- a. Share of the subject countries in imports of the subject goods represents a very high proportion of imports of the subject goods in India.

- b. Share of the subject imports in demand of the product in the country increased significantly, after showing a considerable decline in 2000-01. As stated earlier, comparison with reference to 1999-2000 has to be done considering the final findings of the DG (Safeguards) that the domestic industry suffered serious injury in that period.

Actual and potential negative effects on cash flow:

Continuous losses being suffered by the domestic industry are very adversely affecting the cash flow the domestic industry.

Employment:

Even though the petitioner is a public sector company with little control to reduce employment, the petitioner is forced to take all possible steps to keep employment at the lowest level.

Productivity:

Productivity of the domestic industry has declined in the investigation period as compared to previous year after improving in 2000-01.

Return on investments:

Return on investments has remained negative. Even though the domestic industry had positive return on investment in the beginning of the investigation period, the same became negative and deteriorated thereafter towards the end of the investigation period.

The magnitude of the margin of dumping:

The dumping margin from subject countries are not only more than de-minimis but also very significant. The impact of dumping on the domestic industry is significant.

Growth:

The imports are retarding the growth of the domestic industry. Even when the demand has increased significantly between 1998-99 and investigation period, the sales of the domestic industry have declined with reference to the previous year.

Ability to raise capital investments:

The petitioner is making all attempts to reduce its loan liability in an effort to reduce its interest burden. However, the adverse performance of the petitioner on this product (coupled with other products such as Caustic Soda) are major hurdles to the petitioner from seeking loans at lower rates of interest. Ability to raise funds, for the petitioner, is, therefore, getting adversely affected.

All the parameters, collectively and cumulatively, establish that the domestic industry has suffered material injury from the dumped imports. In view of the foregoing, it is submitted that the preliminary findings is required to be confirmed subject to the above.

Duty in US \$ term:

The Designated Authority has recommended anti-dumping duty in terms of US \$. It is submitted that the final duties may please be recommended in terms of US \$ only so that erosion in the quantum of protection does not take place.

Domestic Industry's Rejoinder on submissions made by the EU:

1. It is factually incorrect to state that Safeguard investigations are still open with regard to this product as the final findings have already been issued by the DG Safeguard.
2. Even when the Government of India has not imposed Safeguard Duty on this product, it does not imply that serious injury was not caused to the domestic industry as a result of increased imports. DG Safeguard, which is the statutory Authority with regard to the issue of serious injury, had clearly held that the domestic industry was seriously injured.
3. Assuming that the domestic industry is operating at full capacity or their sales are increasing, it does not follow that there was 'no injury' to the domestic industry.
4. Assuming that imports have been made to meet the demand, the same does not imply imports at injurious price.
5. The information filed by the domestic industry clearly shows that there was significant price undercutting and underselling, resulting in deterioration in profitability, clearly resulting in injury to the domestic industry. A number of other parameters showing injury to the domestic industry have earlier been brought out by the petitioner and the same is relied upon.
6. It would thus be seen that there is no merit in the arguments advanced by the EU, meriting reconsideration of the preliminary findings. The petitioner requests that the preliminary findings may kindly be confirmed and definitive duties recommended for a period of five years.

II. Views expressed by Exporters prior to and in the Public Hearing on 9/7/2003:- M/s LII Europe GmbH

1. M/s LII Europe have circulated copies of their response to the exporters questionnaire at the time of the oral hearing to all interested parties.
2. They have also submitted copies of "ICIS-LOR Reports" on spot prices of Methylene Chloride.

III. Views expressed by importers prior to and in the Public Hearing:-

None of the known importers responded to the questionnaire forwarded by the Authority or submitted views at the time of the oral hearing.

IV. Views expressed by the Delegation of the European Commission :

The European Commission would like to support the arguments presented by the exporters subject to this proceeding and to draw the attention of the Designated Authority of the following points:

- This anti-dumping investigation has been initiated while there is an existing safeguard investigation still open;
- The European Commission has raised its concerns, amongst others within consultation under Article 12.3 of the WTO Safeguard Agreement, regarding the shortcomings of the injury analysis made in the safeguard investigation. Given that India has not imposed measures in this safeguard case it can only be presumed that no injury was found. The precise findings should be disclosed immediately;
- In the present AD case, it is clear from the disclosure of preliminary findings that the petitioner is operating at full capacity and thus questions must immediately be asked as to whether injury exists here. With the domestic industry operating at full capacity it is also clear that the market needed the additional imports to satisfy demand.
- Data provided for sales of other domestic producers shows that these have increased their sales and it is therefore necessary to also examine whether other factors are causing injury.
- As the domestic producer are operating at full capacity and increasing their sales any injury from imports can only be from price effects but no information has been provided regarding price undercutting, price depression, underselling and profitability. Thus, it can be said that no proof of injury has been provided. Information on prices should be disclosed immediately either in terms of actual prices or in indexed form.

Examination by the Authority:

1. Final Findings were issued by DG Safeguards in the safeguard investigations in which serious injury was established to the domestic industry.
2. The Authority notes that although the domestic industry has optimally utilised its capacity, it has been prevented from recovering a reasonable price and consequently suffered financial losses. Though imports may have been effected to meet the requirements of demand, what is of relevance is the price at which such imports have been effected. If the exporters wanted to supply the subject goods to meet the requirement in the Indian market that could have been done by exporting the requirements at a price equivalent to their normal values but not at dumped prices.
3. The price effect of imports have been examined by the Authority in the relevant paras of these Final Findings. The domestic industry has been forced to reduce its selling prices to respond to the low import prices in the market. The domestic selling prices significantly declined in the first quarter of the POI (April-June, 2001) from Rs ***/MT to Rs ***/MT in the fourth quarter (January -March 2002) i.e., by 18% as a consequence of decline in import prices from the subject countries/territory.

F. DUMPING:-

The Authority sent questionnaires to the known exporters from the subject countries/territory in terms of section 9 A (1). The deficiencies in the exporters responses were brought out in the Preliminary Findings to which the exporters did not respond with the information called for. There are no claims made by the exporters in South Africa and Singapore with regard to Normal Value and Export Price. The Authority has therefore been constrained to rely upon constructed price and best available information with regard to Normal Value and Export Price respectively

(A) Normal Value**1. European Union****(A) LII Europe, GmbH**

This exporter has given an incomplete response which is grossly lacking in vital data/information. In the absence of transaction wise information on domestic sales, the cost of production of the subject goods and costs incurred after fob, the Authority is not in a position to determine the sales price in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporter. The Authority is therefore unable to come to any material conclusion with regard to normal value.

The petitioner has stated that Chlor Alkali is a leading journal publishing information with regard to a number of products one of which is Methylene Chloride. The petitioner has been able to trace the selling price of Methylene Chloride in the European Union with the help of this journal. However, it is noted that the prices in this journal are export prices and hence indicative only.

It has been submitted by the petitioner that in the methanol route the cost of methanol and chlorine constitute about 50% of the total cost of production. The petitioner has considered prices of chlorine and methanol on the basis of the prevailing prices in European Union and have constructed cost of production for the producers in this territory, considering consumption norms of the Indian producers which, as has been claimed, cannot vary significantly for the Indian producers and producers in the subject countries.

The normal value as per the constructed cost method is therefore considered to be USD ***/MT or Rs ***/MT for the 'bulk' product and USD ***/MT or Rs ***/MT for the 'packed' product for LII Europe, GmbH at an average exchange rate during the POI of 1USD=Rs.47.76.

(B) Ineos Chlor

The Authority notes that the cost of production stated by the exporter for the product under investigation is USD ***/MT. The selling price for the bulk product in the EU market is USD ***/MT and that for packed product is USD ***/MT. The ex-factory domestic selling price stated for the Bulk product sold in the domestic market is USD ***/MT while that for packed product is USD ***/MT. The adjustments considered for arriving at the ex-factory prices for both bulk and packed grades have not been furnished and are hence not known.

The export price for the bulk product to India is USD ***/MT and that for packed product is USD ***/MT. The ex-factory export price to India for bulk is US***/MT while that for packed is USD***/MT. The adjustments considered for arriving at the ex-factory export prices for both bulk and packed grades have not been furnished and are hence not known.

The deficiencies in the exporters response have been brought out in Para 4(B) of the Preliminary Findings. Considering the ex-factory normal value of USD ***/MT claimed for the bulk product and ex-factory export price of USD ***/MT claimed by the exporter, the dumping margin for Methylene Chloride (bulk) is USD***/MT (which is 43.41% of the export price).

Considering the ex-factory normal value of USD ***/MT claimed for the packed product and ex-factory export price of USD***/MT claimed by the exporter, the dumping margin for Methylene Chloride (pack) is USD ***/MT (which is 21.68% of the export price).

However, due to the deficiencies in the exporters response brought out in Para 4(B) of the Preliminary Findings, the information/data submitted by the exporter is not acceptable and the Authority has been constrained to reject the exporters response for the purpose of these Final findings. It has been submitted by the petitioner that in the methanol route the cost of methanol and chlorine constitute about 50% of the total cost of production. The petitioner has considered prices of chlorine and methanol on the basis of the prevailing prices in European Union and have constructed cost of production for the producers in this territory, considering consumption norms of the Indian producers which, as has been claimed, cannot vary significantly for the Indian producers and producers in the subject countries.

The normal value as per the constructed cost method is therefore considered to be USD ***/MT or Rs ***/MT for the 'bulk' product and USD ***/MT or Rs ***/MT for the 'packed' product for M/s Ineos Chlor at an average exchange rate during the POI of 1USD=Rs.47.76.

2. Singapore

For Singapore the petitioner submits that prices in the domestic market are not published in Chlor Alkali. There is no other reasonably sufficient evidence of the prices in the domestic market in Singapore. The petitioner has therefore claimed the normal value on the basis of constructed cost of production.

It has been submitted that in the methanol route the cost of methanol and chlorine constitute about 50% of the total cost of production. The petitioner has considered prices of chlorine and methanol on the basis of the prevailing prices in European Union, South Africa and Singapore and have constructed cost of production for the producers in these countries, considering consumption norms of the Indian producers which, as has been claimed, cannot vary significantly for the Indian producers and producers in the subject countries. The normal value as per the constructed cost method comes USD ***/MT for Singapore.

The normal value in Singapore is therefore considered to be USD ***/MT or Rs ***/MT for the 'bulk' product and USD ***/MT or Rs ***/MT for the 'packed' product at an average exchange rate during POI of 1USD=Rs 47.76.

3. South Africa

As far as M/s Bayer (Pty) Ltd., is concerned the Authority in its reply to them had noted that the Preliminary Findings Notification had merely observed that exporters from South Africa have not responded to the questionnaire. There was no reference to M/s Bayer (Pty) Ltd. The Preliminary Findings Notification mentions that Bayer (Pty) Ltd. in the Republic of South Africa is not a manufacturer of Methylene Chloride.

It was clarified that in their response to the Initiation, Bayer had stated that no product was exported from South Africa to India during the POI. This has been reported in the Preliminary Findings. Annexure 5 of the petition shows imports of the subject goods from South Africa. The Authority has noted that a quantity of 1501 MT of the subject goods was imported from South Africa during the POI.

The Authority observes that the exporters from South Africa have not responded to the questionnaire in the prescribed format and have not furnished information relating to normal value, export price, and dumping margin. The Authority therefore considers the exporters to be non-cooperative and has proceeded on best available information.

For South Africa the petitioner submits that prices in the domestic market are not published in Chlor Alkali. There is no other reasonably sufficient evidence of the prices in the domestic market in this country. The petitioner has therefore claimed the normal value on the basis of constructed cost of production. It has been submitted that in the methanol route the cost of methanol and chlorine constitute about 50% of the total cost of production. The petitioner has considered prices of chlorine and methanol on the basis of the prevailing prices in European Union, South Africa and Singapore and have constructed cost of production for the producers in these countries, considering consumption norms of the Indian producers which, as has been claimed, cannot vary significantly for the Indian producers and producers in the subject countries. The normal value as per the constructed cost method comes to USD ***/MT or Rs ***/MT for South Africa.

The normal value in South Africa is therefore considered to be USD ***/MT or Rs ***/MT for the 'bulk' product and USD ***/MT or Rs ***/MT for the 'packed' product at an average exchange rate during POI of 1USD=Rs 47.76.

(B) Export Price

1. European Union

The weighted average cif price as per the information available with the Authority is determined at Rs ***/MT for the European Union. The ex-factory export price has been determined after taking USD ***/MT as ocean freight, ***% as marine insurance charges, commission @ ***%, ***% for inland freight and ***% for port expenses as per the petitioners information. After adjustments on these accounts the ex-factory fob export price is estimated to be Rs ***/MT or USD ***/MT for the European Union at an average exchange rate of 1USD=Rs 47.76 during the POI.

The petitioner has stated that bulk and loose shipment of imports can be handled only at Kandla Port in the country, as the special facilities required for its unloading and further shipment are available only at this port. It is seen that a quantity of ***MT of the subject goods have been imported at Kandla port from the EU at a cif price of Rs *** or Rs *** (USD ***/MT). After adjustments on the aforesaid accounts the ex- factory fob export price for bulk shipments of the subject goods is estimated to be Rs ***/MT or USD ***/MT for the European Union at an average exchange rate of 1USD=Rs 47.76 during the POI.

A quantity of *** MT of imports of the subject goods at ports other than Kandla of a cif value of Rs *** or Rs *** (USD ***/MT) were imported. After adjustments on the aforesaid accounts the ex- factory fob export price for packed shipments of the subject goods is estimated to be Rs ***/MT or USD ***/MT for the European Union at an average exchange rate of 1USD=Rs 47.76 during the POI

2. South Africa

The weighted average cif price as per the information available with the Authority is determined at Rs ***/MT for South Africa. The ex-factory export price has been determined after taking USD ***/MT as ocean freight, ***% as marine insurance charges, commission @ **%, ***% for inland freight and ***% for port expenses as per the petitioners information. After adjustments on these accounts the ex- factory fob export price is estimated to be Rs ***/MT or USD ***/MT for South Africa at an average exchange rate of 1USD=Rs 47.76 during the POI.

3. Singapore

The weighted average cif price as per the information available with the Authority is determined at Rs ***/MT for Singapore. The ex-factory export price has been determined after taking USD ***/MT as ocean freight, ***% as marine insurance charges, commission @ **%, ***% for inland freight and ***% for port expenses as per the petitioners information. After adjustments on these accounts the ex-factory fob export price is estimated to be Rs ***/MT or USD ***/MT for Singapore at an average exchange rate of 1USD=Rs 47.76 during the POI.

(C) Dumping margin

Authority's Position:-

The Authority followed the consistent practice of adopting the principles governing the determination of Normal Value, Export Price and Margin of Dumping as laid down in Annexure I to the anti-dumping rules. Dumping margin has been determined on the basis of a fair comparison of Export Price with the Normal Value in pursuance of the principle laid down in Para 6 of Annexure-1 to the Rules.

European Union

(1) LII, Europe GmbH

Considering the normal value at USD ***/MT and the ex-works export price at USD ***/MT for bulk shipments, the dumping margin determined by the Authority comes to USD ***/MT (which is 85.32% of export price).

Considering the normal value at USD ***/MT /MT and the ex-works export price at USD ***/MT for packed shipments, the dumping margin determined by the Authority comes to USD ***/MT (which is 55.75% of export price).

(2) Ineos Chlor

Considering the normal value at USD ***/MT and the ex-works export price at USD ***/MT for bulk shipments, the dumping margin determined by the Authority comes to USD ***/MT (which is 85.32 % of export price).

Considering the normal value at USD ***/MT and the ex-works export price at USD ***/MT for packed shipments, the dumping margin determined by the Authority comes to USD ***/MT (which is 55.75 % of export price).

South Africa

Considering the normal value at USD***/MT and the ex-works export price at USD ***/MT for the 'bulk' product, the dumping margin determined by the Authority comes to USD ***/MT(which is 99.92 % of export price).

Singapore

Considering the normal value at USD ***/MT and the ex-works export price at USD ***/MT for the 'bulk' product, the dumping margin determined by the Authority comes to USD ***/MT (which is 62.42 % of export price).

G. INJURY:-

Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such article..." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

Annexure II(iii) under Rule 11 supra further provides that in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigations, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two per cent expressed as a percentage of export price and the volume of the imports from each country is three per cent of the imports of the like article or where the export of the individual countries is less than three per cent, the imports cumulatively account for more than seven per cent of the imports of the like article, and cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article.

The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from the subject countries/territory are more than the limits prescribed in Rule 11 Supra.

For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, quantum of sales, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II (iv) of the rules supra, the details of which as brought out in the Preliminary Findings are reproduced below:-

(a) Quantum of Imports

S.No.	1998-99	1999-2000	2000-01	Qty : kg April '01-March'02) (Kandla port and DGCIS)
Individual country imports				
European Union	74,87,054	10,175,660	32,23,999	6,729,090
South Africa	---	25,378	---	1,501,000
Singapore	12,600	---	1000	5,20,000
Ineos Chlor data				45,51,130
LII Europe data				42,18,200
Total (subject exporters)				87,69,330
Total subject Countries	74,99,654	102,01,038	32,24,999	107, 90, 330
Other sources	17,69,054	1,80,496	6,29,701	6,49,475 (as per DGCIS)
Total imports	92,69,054	103,81,534	38,54,700	114, 39, 805

The Authority notes that DGCIS data shows no imports from South Africa and Singapore. The DGCIS data shows lower imports from the EU as compared to the data from Kandla port.

The increase in the total imports of Methylene Chloride from the subject countries was significant in the POI as compared with the quantum of imports in 2000-01. The subject countries accounted for 94.32% of the total imports in the POI.

The share of EU, South Africa and Singapore in total imports was 76.65%, 13.12% and 4.54% respectively in the POI.

(b) Production and Capacity Utilisation

The production and capacity utilisation of the petitioner was as follows:-

GACL (MT)	1998-99	1999-2000	2000-01	2001-02 (POI)
Installed Capacity	8910	8910	8910	8910

Production	8572	8721	9559	8975
Capacity Utilisation (%)	96.21	97.88	107.28	100.73

The quarterwise projection based on the monthwise details on production and capacity utilisation of the domestic industry is given in the table below:-

	Quarter 1 Apr.-June-01	Quarter 2 July - Sept. 01	Quarter 3 Oct.-Dec. 01	Quarter 4 Jan.-Mar.- 02
Installed Capacity	2227	2227	2228	2228
Production	2159	2191	2463	2162
Capacity Utilisation	96.95	98.38	110.55	97.03

From the above, it is seen that production has declined. The petitioner in order to distribute fixed costs and minimize injury operated at high capacity which however is not an indicator of improved performance of the petitioner.

(c) Sales and Market Share

	Qty (MT)			
	1998-99	1999-2000	2000-01	2001-02 (POI)
Sales of Petitioner	8207	8152	9415	9158
Sales of other dom. Producers				
Chemplast Sanmar	14,059	12,822	14,396	14,557
SRF	2465	3306	6586	7448
Total Sales	24731	24280	30397	31163
Demand	34,000	34,661	34,252	42,603
Share of petitioner	24.14%	23.52%	27.47%	21.49 %
Share of petitioner + supporter in demand	65.49%	60.51%	69.51%	55.66%
Share of imports in demand	27.26%	29.95%	11.25%	26.85%
Share of dumped imports	22.06%	29.43%	9.41%	25.33%

It is seen that total and dumped imports in the POI (2001-02) have increased in absolute terms as compared to the previous year (2000-01). While the market share of imports from the subject countries have increased in demand the share of the domestic industry has declined in the POI. The petitioner's share in demand has fallen sharply from 27.49% in 2000-01 to 21.49% in the POI.

(d) Price undercutting and price depression

Rs/kg							
Year	Sales Realisation (Rs/kg)		Landed Price of Imports				
	Bulk	Packed	EU	South Africa	Singapore	Others	
1998-99	***	***	***	---	***	***	
1999-2000	***	***	***	***	---	***	
2000-2001	***	***	***	---	***	***	
2001-02 (POI)	***	***	*** (wt ave)		***	***	
			bulk	packed			
			***	***			
Undercutting %			6.68%	(-.04%)	12.37%	5.44%%	(-)

It is evident from the above table that the exporters from the subject countries/territory have reduced their prices significantly in the POI. The domestic industry has been forced to reduce its selling prices to respond to the low import prices in the market. The domestic selling prices significantly declined in the first quarter of the POI (April-June, 2001) from Rs ***/MT to Rs ***/MT in the fourth quarter (January -March 2002) i.e., by 18% as a consequence of decline in import prices from the subject countries. Hence the price effect of imports is established from the above.

The Authority notes from the submissions made by M/s Ineos Chlor that they have exported a quantity of 3300.13 MT of the bulk grade of a cif value of USD *** (USD ***/MT) and 1251 MT of the packed grade of a cif value of USD *** (USD ***/MT). The Authority notes from the submissions of M/s LII Europe that they exported a quantity of 4218.2 MT of the bulk product of a cif value of USD *** (USD ***/MT). The position regarding price undercutting based on the submissions made by the said exporters is as follows:

Year			Landed Price of Imports (EU) Rs./MT			
	Bulk	Packed	Bulk	Packed	Price Underselling %	
Non-injurious price of domestic industry	***	***			Bulk	Packed
Ineos Chlor (EU)			***	***	34%	9.54%
LII Europe			***	---	38%	---

(e) Profitability:-

Petitioner	(Rs. per MT)		
	1999-2000	2000-01	2001-02 (POI)
Cost of Production	***	***	***
Selling price	***	***	***

Trend Indexed	100.00	123.65	108.67
Profit & Loss	***	***	***
Trend Indexed	-100.00	-112.05	-133.63

From the above table it is seen that even though the unit cost of production has declined (between 2000-01 and 2001-02) the selling price has declined more than decline in the unit cost of production. A quarterwise projection based on the month wise details on sales volume, selling price, cost of production and profit and loss of the petitioner shows that the selling price and losses incurred by the petitioner have increased as shown below: -

	Quarter 1 Apr.-June-01	Quarter 2 July - Sept. 01	Quarter 3 Oct.-Dec. 01	Quarter 4 Jan.-Mar.- 02
Sales Volume	2270	2145	2431	2312
Selling Price	***	***	***	***
Cost of Production	***	***	***	***
Profit/Loss	***	***	***	***

The profitability of the domestic industry has deteriorated very significantly inter-se in the investigation period. From a situation of profits in the beginning of the investigation period, the industry has been left to a situation of losses towards the end of the investigation period. Further, the losses increased gradually within the investigation period.

(f) Closing stocks:-

1998-99	1999-2000	2000-01	2001-02
64	472	237	248

The petitioner's closing stocks have increased.

(g) Return On Investments

	Rs. Lacs		
	1999-2000	2000-01	2001-02
Capital Employed	***	***	***
Profit/Loss	***	***	***
Return on Investment %	***	***	***

(h) Cash Flow/Profit

	1999-2000	2000-01	2001-02
Profit/Loss (Rs/Lacs)	***	***	***
Depreciation (Rs/Lacs)	***	***	***
Cash Flow/Profit (Rs/Lacs)	***	***	***
Trend Indexed	100.00	40.88	-0.75

The continuous losses being suffered by the domestic industry are adversely affecting the cash flow of the domestic industry.

(i) Employment

Even though the petitioner is a public sector company with little control to reduce employment, the petitioner is forced to take all possible steps to keep employment at the lowest level. At the same time, the petitioner is forced to resort to minimum wage increase which the petitioner is obliged to under the legal provisions.

(j) Productivity

	1999-2000	2000-01	2001-02
Production (MT)	***	***	***
Production per day (day/MT)	***	***	***
Trend (considering 360 days of production days)	100.00	109.61	102.91

(k) Given the previous history of imports and decline in export prices, there would have been further decline in sales had the domestic industry not reduced prices.

(l) Imports are retarding the growth of the domestic industry. Growth has been negative in 2002-02 as compared to the previous year even though demand has increased.

H. CONCLUSION ON INJURY

6. In view of the foregoing the Authority confirms the conclusions on injury in Para J of the Provisional Findings and reiterates that:-

- (a) the quantum of imports from the subject countries/territory have increased in absolute terms;
- (b) the market share of the petitioners have gone down while that of imports has increased;
- (c) the petitioners have been forced to match import prices that are below their non-injurious price and net sales realisation resulting in losses

The Authority therefore concludes that the domestic industry has suffered material injury.

7. Causal Link

The Authority holds that the material injury to the domestic industry has been caused by imports from the subject countries/territory that are major exporters of Methylene Chloride to India. The Authority notes that the volume and value of imports of Methylene Chloride from other countries are either de-minimis or the prices are significantly higher. There is no decline in demand of Methylene Chloride in India which could have contributed to any injury to the domestic industry. While the domestic industry's share in demand has decreased from 69.51% in 2000-01 to 55.66% in 2001-02, the share of dumped imports has increased from 9.41% in 2000-01 to 25.33% in 2001-02. The Authority notes that import prices from the subject countries/territory have undercut the prices of the domestic product forcing the domestic industry to sell below its non-injurious price which resultantly, the domestic industry was unable to recover. The material injury to the domestic industry was therefore caused by the dumped imports from the subject countries/territory.

8. Anti-Dumping duty imposed:-

The Authority has carefully evaluated the injury caused to the domestic industry on account of dumping of Methylene Chloride and has recommended the amount of anti-dumping duty equivalent to the dumping margin or less, which if levied, would remove injury to the domestic industry. For this purpose, the Authority has compared the non-injurious selling price of the domestic industry with the landed value of imports from the subject countries. Wherever the margin is found to be less than the dumping margin, the Authority has recommended duty lower than the dumping margin.

9. FINAL FINDINGS:-

The Authority after considering the foregoing, concludes that:

- (a) Methylene Chloride originating in or exported from the European Union, South Africa and Singapore has been exported to India below normal value, resulting in dumping;
- (b) the domestic industry has suffered material injury;
- (c) material injury has been caused by imports from the subject countries/territory.

10. The Authority recommends imposition of definitive Anti-dumping duty on all imports of Methylene Chloride originating in or exported from European Union, South Africa and Singapore classified under customs sub-heading 2903.12 of Chapter 29 of the Customs Tariff Act and 29031200 of the ITC (HS) Code of the Customs Tariff Act. The anti-dumping duty shall be the amount mentioned in Col.9.

Sl. No	Sub-Heading or Tariff Item	Description of Goods	Specification	Country of Origin	Country Of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measure-ment	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	2903.12	Methylene Chloride	Bulk	EU	All	Any	Any	118	MT	USD
2.	2903.12	Methylene Chloride	Packed	EU	All	Any	Any	80.9	MT	USD
3.	2903.12	Methylene Chloride	Bulk	All except EU	EU	Any	Any	118	MT	USD
4.	2903.12	Methylene Chloride	Packed	All except EU	EU	Any	Any	80.9	MT	USD
5.	2903.12	Methylene Chloride	Bulk/Packed	South Africa	All	Any	Any	140. 18	MT	USD
6.	2903.12	Methylene Chloride	Bulk/Packed	All except South Africa	South Africa	Any	Any	140. 18	MT	USD
7.	2903.12	Methylene Chloride	Bulk/Packed	Singapore	All	Any	Any	36. 30	MT	USD
8.	2903.12	Methylene Chloride	Bulk/Packed	All except Singapore	Singapore	Any	Any	36. 30	MT	USD

11. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

12. Subject to the above, the Authority confirms the preliminary findings dated 24th December, 2002.

13. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act, *supra*.

L. V. SAPTHARISHI, Designated Authority

.....